केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई - २ अक्तूबर २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६८, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

विश्व हिन्दी सम्मेलन में केन्दमंत्री राजनाथसिंह से पुरस्कार स्वीकार करते हैं।
पीछे खडे अनुमोदन करते हैं मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री।

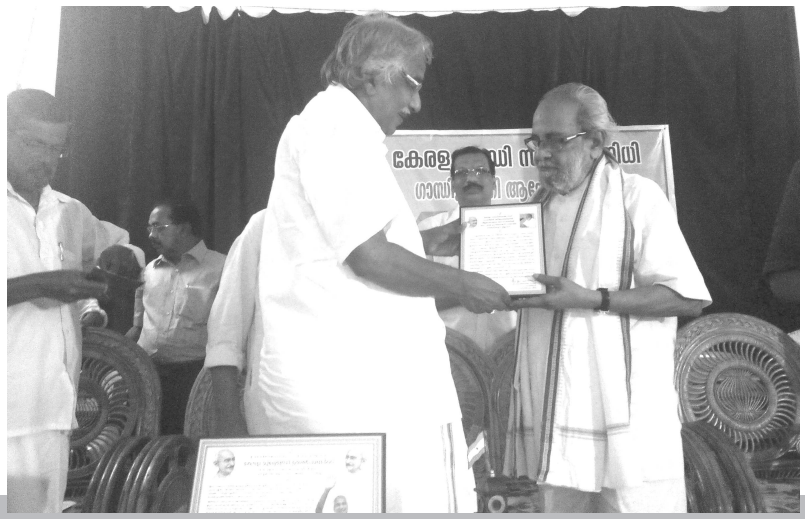

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर केरल के मुख्यमंत्री श्री. उम्मन चाण्डी जी डॉ.चन्द्रशेखरन नायर को गाँधी स्मारकनिधी का पुरस्कार देते हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन समारोह में उपस्थित प्रमुख अतिथियाँ

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अभिनन्दन में केरल के मुख्यमंत्री श्री. उम्मन चाण्डी डॉ.चन्द्रशेखरन नायर को शॉल पहनाते हैं।

विश्ववेदी के आठवें वार्षिक सम्मेलन में राज्यसभा मेंबर डॉ. टी.एन.सीमाजी से विश्ववेदी साहित्य पुरस्कार डॉ.चन्द्रशेखरन नायर सवीकार करते हैं। समीप चेङ्कोट्टुकोणं सुरेन्द्रन, डॉ.षाजी प्रभाकर, कुमारन नायर (मुंबई), डॉ.एम.आर. तंपान आदि।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के सम्मेलन में जस्टिस हरिहरन नायर, डॉ. चन्द्रशेखरन नायर के अभिनन्दन में डॉ. तंकमणिअम्मा साथ

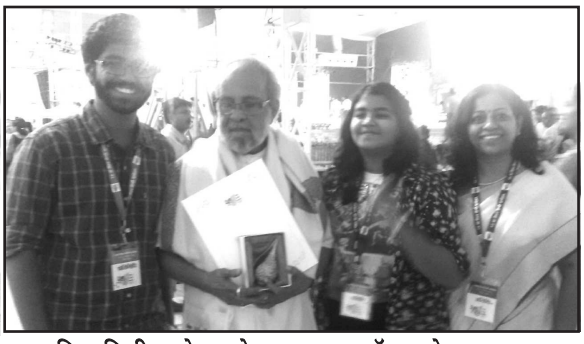

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर डॉ.चन्द्रशेखरन नायर, पुत्री सुनन्दा, उसकी बेटी मालविका और बेटा योगेष के साथ

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई - २ अक्तूबर २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६८ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

keralahindisahityaacademy.com **www.drnchandrasekharannair.in**

सम्पादकीय

हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा निश्चित करें

मैं ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अन्य सभी मंत्रियों को पंजीकृत पत्र भेजे थे कि पार्लियामेंट में हिन्दी का प्रश्न हल करें और उसकी व्यवस्था तुरंत की जाय। पर, अब तक उस संबंध में सभा में कोई चर्चा नहीं हुई है। माननीय बाजपेयी सरकार के समय स्वत: इस प्रश्न का हल होगा, यही चाहते ये पर कुछ न हुआ। लेकिन अब हिन्दी को अकेली राष्ट्रभाषा निश्चित करने का नियम स्थिर बना लेना है। नहीं, तो फिर इसकी व्यवस्था आगे सुदृढ नहीं बनायी जा सकती। मैं ने पिछले अंक में यह भी लिखा था कि लगता है, इस प्रश्न पर आगे हिन्दी सेवियों एवं राष्ट्रहित चिंतकों को उपवास-सत्याग्रह आदि कार्यों में लग जाना पडेगा। भारत की राष्ट्रभाषा के नाम पर इस प्रकार का आयोजन होना सरकार के हित में शुभकर नहीं होगा।

अब २०१५ सितंबर १०,११,१२ दिनों में भोपाल में विश्व हिन्दी सम्मेलन का त्रिदिवसीय त्योहार ही कहे चला। विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज, प्रधानमंत्री और मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री, इन तीनों महारथियों के सम्मिश्रित चिंतन एवं कार्यक्रम से हिन्दी के स्वतंत्र स्वरूप एवं भविष्य का आयोजन किये जाने का समुचित कार्यारंभ हुआ। लगता है कि उनका संकल्प यही था कि हिन्दी संबन्धी कोई भी अडचन भविष्य में न हो और साथ ही हिन्दी को सशक्त एवं सयुक्तिक भाषा का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो। हम इस प्रयत्न और सफल कार्यवाई का समर्धन करते हैं। क्योंकि, हिन्दी सेवियों की सारी शंकाएं दूर की जाय और हिन्दी के विपक्ष में बोलनेवालों का मुंह बंद करें। हमें आशा करनी चाहिए कि विश्व हिन्दी सम्मेलन का निर्णय अब तक कार्यान्वयन हो गया होगा और अब आगे संविधान की परिरक्षा प्राप्त होने में कोई असुविधा न होगी।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

डॉ.यायावर को इमिरेट्स् फैलोशिप मिली

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली द्वारा डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा यायावर को इमिरेट्स रिसर्च फैलोशिप प्रदान की गयी है। यह प्रतिष्ठित फैलोशिप केवल सेवामुक्त प्राध्यापकों के लिए है। स्मरणीय है कि आयोग विज्ञान, भारतीय व विदेशी भाषायें, भाषा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान के सभी विषयों और वाणिज्य के विषयों को मिलाकर सबमें १०० विद्वानों को यह फैलोशिप देता है। हिन्दी साहित्य में यह केवल दो लोगों को मिली है जिनमें एक डॉ.यायवर हैं। दूसरा केरल निवासी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी हैं। डॉ. यायावर ने इस फैलोशिप के लिए नवगीत कोश तैयार करने के लिए शोध प्रकल्प प्रस्तुत किया था जिसकी गुणवत्ता को देखते हुए उन्हें यह फैलोशिप प्रदान की गयी है। डॉ.यायावर एस.आर.के. स्नातकोत्तर महाविद्यालय फिरोजावाद को शोध केन्द्र बनाकर अपना शोध प्रकल्प पूर्ण करेंगे। वे वहीं से हिन्दी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में सेवामुक्त हुए हैं।

स्मरणीय है कि डॉ.यायावर की २१ मौलिक तथा १२ सम्पादित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। १०० सम्पादित कृतियों में उनकी लेखकीय सहभागिता है और ५ पुस्तकें अतिशीघ्र प्रकाशाधीन हैं। वे कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं। उन्होंने नवगीतकारों से अपना परिचय तथा प्रकाशित कृतियाँ भेजने का अनुरोध किया है। नवगीत सम्बन्धी किसी भी सूचना को उन तक पहुँचाया जा सकता है।

डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा यायावर, ड़ी.लिट, ८६, तिलकनगर, बाईपास रोड, फीरोज़ाबाद-२८३२०३ मोबाइल ९४१२३१६७७९

कर्मनाशा हो गयी

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा,

पुण्यसलिला थी मगर क्यों कर्मनाशा हो गयी
राह-जंगल-घाटियों में बहती रही
सभ्यता की पुण्य गाथायें मधुर कहती रही
आस्था, संस्कृति विमल इतिहास, मंगल कामना
महकते विश्वास का स्वर थी हताशा हो गयी
धनुर्धर गुज़रा प्रिया को अनुज को ले साथ में
मूल्य, मर्यादा, समर्पण शील को ले हाथ में
दिव्य छवि रख प्राण में सहती रही
सिहरन सदा तृप्ति का आलोक ओढ़े थी
पिपासा हो गयी एक मुरली ध्वनि
मधुर आनन्द से भरती रही रास मेंडूबा निशा में
चाँदनी झरती रही 'गीत' कुछ 'गोविन्द' के
कुछ भ्रमर के पीकर चली यातना कैसे बनी?
कैसे निराशा हो गयी
गुनगुनाती चपलता का यदि न लौटा प्रीति-स्वर
गन्धदीपों का मधुर विश्वास भी जाये न मर
साथना, संकल्प, चिन्तन मूल्य नव विश्वास ले
स्वप्न देखा है नदी फिर पूर्ण आशा हो गयी

८६, तिलक नगर, बाईपास रोड़, फीरोज़ाबाद-२८३२०३

हिंदी दिवस समारोह

डॉ.पी.लता

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा स्थापित केरल में हिन्दी साहित्य की पोषक संस्था 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' में हिन्दी दिवस समारोह (हिन्दी उत्सव समारोह) १४ सितंबर २०१५ को अपराह्न २.०० बजे से आरंभ हुआ। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी हॉल में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ रंजिता राणी, पार्वती चन्द्रन तथा दिव्या वी.एच. के प्रार्थना गान से हुआ। डॉ.पी.लता (सचिव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) ने स्वागत भाषण में भारतवर्ष के संदर्भ में १४ सितंबर के महत्व पर प्रकाश डाला तथा मंच और सभागार में उपस्थित हिंदी प्रेमी व्यक्तियों का स्वागत किया। श्री. एम.आर.हरिहरन नायर (पूर्व न्यायधीश, उच्च न्यायालय, केरल; संरक्षक, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) ने १४ सितंबर का महत्व ध्यान में रखते हुए अपना आधा भाषण हिन्दी में दिया। साधारणतया अंग्रेज़ी या मलयालम में भाषण देनेवाले पूर्व न्यायधीश का हिन्दी भाषण बड़ा प्रभावी रहा। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) ने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के वैश्विक स्तर पर प्रकाश डाला। हिन्दी को विश्व भाषाओं में पहला स्थान मिलने की अपनी अभिलाषा भी प्रकट की। डॉ.एस.तंकमणिअम्मा (महासचिव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) ने मुख्य भाषण में इस पर श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया कि वह दिन विदूर नहीं है जबकि सबकी प्रिय भाषा हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषा बन जाएगी। उन्होंने बहुभाषा-भाषी भारत देश में हिन्दी को असली राजभाषा का स्थान मिलने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। डॉ.लीलाकुमारी अम्मा. एस (अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.एन.कॉलेज, कोल्लम), डॉ.डी.गिरिजा (उपाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एम.जी.कॉलेज, तिरुवनंतपुरम) तथा श्रीमती आर.आई.शांति (अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनंतपुरम) ने आशीर्वाद भाषण दिये।

उद्घाटन सत्र के बाद अगल सत्र संगोष्ठी का था। संगोष्ठी का मुख्य विषय था केरल में हिन्दी। उस मुख्य विषय के अंतर्गत आठ उपविषयों पर आलेख प्रस्तुत किये गये। आलेख प्रस्तोता द्वारा प्रस्तुत विषय इस प्रकार हैं - डॉ.एलिज़बत्त जोर्ज (विषयः केरल की हिन्दी कहानियाँ), डॉ.सुमा आई (केरल में हिन्दी भाषा की विकास यात्रा), डॉ.जयश्री ओ. (केरल की हिन्दी कविता), पार्वतीचन्द्रन ('प्रकृति रहस्यमयी माँ' में प्रकृति-चित्रण), दिव्या वी.एच. (केरल हिन्दी साहित्य अकादमी - हिन्दी सेवी संस्था), राखी एस.आर (हिन्दी साहित्य सेवी डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै), रंजिता राणी ('संस्कृति के स्वर' में केरलीय संस्कृति), डॉ.महेश (डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरः कर्मठ हिन्दी सेवी) आदि। प्रस्तुत किये गये आलेखों पर चर्चा के बाद श्रीमती राजपुष्पम पीटर ने स्वालिखित एक राष्ट्रीय गान गाया।

श्रीमती वी.आनंदवल्ली द्वारा अपने स्वर्गीय बेटे पर लिखे गये शोक काव्य - बाष्पांजलि - की कुछ प्रतियों का वितरण भी किया गया। डॉ.उषाकुमारी के.पी. (प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, एम.जी.कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम) ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। राष्ट्रगीत के आलाप के साथ सायाह्न ५.३० बजे को हिन्दी उत्सव समारोह समाप्त हुआ।

(सचिव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)

केरल में हिन्दी भाषा की विकास यात्रा

डॉ.सुमा आई

केरल में हिन्दी भाषा का प्रचार पहले अनौपचारिक रूप से हुआ, जैसे- हिन्दी भाषा जाननेवाले व्यापारियों, सैनिकों तथा तीर्थाटकों का उत्तर भारत से केरल में आना और उनसे केरलीयों का संपर्क होना; केरल से हिन्दी क्षेत्र में जानेवाले केरलीयों का हिन्दी क्षेत्र के लोगों से संपर्क होना आदि। इंदौर में संपन्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन के निर्णय के अनुसार मद्रास (चेन्नै) को केन्द्र बनाकर दक्षिण भारत (केरल, कर्णाटक, तमिलनाडु और आन्ध्राप्रदेश) में औपचारिक रूप से हिन्दी का प्रचार शुरू हुआ। केरल में हिन्दी के प्रचारार्थ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा नियुक्त किये गये प्रथम हिन्दी प्रचारक हैं श्री.एम.के.दामरन उण्णि। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास ने केरल के एरणाकुलम जिले में सन १९३२ से एक अधीनस्थ शाखा खोली। फिर भी श्री.के.वासुदेवन पिल्लै ने तिरुवितांकूर हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की, जिसका सन १९५६ में केरल राज्य के गठन के वाद नाम हो गया 'केरल हिन्दी प्रचार सभा'। आज केरल भर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी शिक्षण केन्द्र कार्यरत हैं।

केरल में हिन्दी भाषा की विकास यात्रा पर विचार करते वक्त एक व्यक्ति का नाम महत्वपूर्ण है - श्री.जी.नीलकंठन नायर, जिन्होंने केरल के हिन्दी लेखकों को लिखने केलिए यहाँ एक हिन्दी पत्रिका प्रकाशित की। सन् १९४१ में प्रकाशित इस पत्रिका का नाम है 'हिन्दी भिन्न'।

केरल में हिन्दी प्रचार के संदर्भ में कई व्यक्ति चिरस्मरणीय हैं, जो स्वर्गीय हुए हैं, जैसे श्री.एम.के. वेलायुधन नायर, पी.पी.अप्पु, पी.नारायण प्रो.आर.जनार्द्धनन पिल्लै, अभयदेव, नारायणदेव आदि।

आज केरल के स्कूलों और कॉलेजों में हिन्दी माध्यम से अध्यापन चल रहा है। यहाँ हिन्दी में एम.फिल, पी.एच.डी.तथा सीनियर रिसर्च फेलोशिप का शोथकार्य चल रहा है।

केरल की हिन्दी कहानियाँ - ड़ॉ.रामन नायर की कहानियों के विशेष संदर्भ में

डॉ.एलिसबेत्त जार्ज

केरल में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी विकास हुआ। साहित्य की सभी विधाओं में हिन्दी के प्रतिभा-संपन्न लेखकों की रचनाऐं प्रकाश में आईं।

'कहानी' गद्य साहित्य की सबसे प्रखर विधा है। बदलते जीवन-संदर्भों को यथार्थता में प्रस्तुत करते में कहानी सबसे सक्षम होती है। केरल में कहानी लेखन की परंपरा आज़ादी के पहले से आरंभ होती है। केरल की पहली हिन्दी पत्रिका 'हिन्दी मित्र' तथा बाद में अन्य हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन से केरलीय रचनाकारों को अपनी रचनायें प्रकाशित करने का ज्यादा मौका मिला। पी.के. केशवन नायर की कहानी 'मेरा सुख-स्वप्न' (१९२९) तथा सामाजिक समस्या पर आधारित 'सुई' (१९३२), दिवाकरन पोट्टि की 'रेशमी रुमाल' (१९४३) आदि उस समय की पत्रिकाओं में छपकर आयी थीं। देश प्रेम की भावना को उजागर करनके वाली कहानियाँ सामाजिक विकास को भी लक्ष्य करके लिखी गई थीं। आज़ादी के बाद कहानी के कथ्य-शिल्प में समग्र परिवर्तन आया। सामाजिक समस्याओं पर कहानियाँ लिखी गईं। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, डॉ.गोविन्द शेणाई, डॉ.एन.रामन नायर जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के ज़ारिए केरल भूमि का यश हिन्दी क्षेत्र में फैला दिया।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर को हिन्दी क्षेत्र के महान साहित्यकारों के समकक्षा माना जाता है। उनके दो-तीन कहानी-संकलन प्रकाशित हए हैं। 'हार की जीत', 'प्रोफसर और रसोइया' तथा 'बहुचर्चित कहानियाँ'। उनकी राष्ट्रीय, सामाजिक, मानवीय चेतना से संपन्न कहानियों की शिल्प-चातुरी, कथ्य की गहराई और भाषा प्रवाह काफी सराहे गये। 'चमार की बेटी' जो 'हार की जीत' में संकलित है, नायर जी की पहली कहानी है। इसमें नारी की पराधीनता का मार्मिक चित्रण हुआ है।

डॉ.गोविन्द शेणाई व्यंग्य के अग्रणी कथाकार हैं। समाज में व्याप्त बुराइयों, जीवन के स्वोखलेपन आदि का पर्दाफाश करने में उन्होंने व्यंग्य का सहारा लिया है। 'आगे कौन हवाल', 'मिस्टिक साहब का कुर्ता' आदि उनकी कहानियों के संकलन हैं।

ड़ॉ.एन.रामन नायर उच्चकोटि के कहानीकार हैं। उनके दो कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं - 'द्वादशी' (१९८४) और 'क्या माफी नहीं दोगे' (१९९५)। उनकी कहानियों में केरलीय जीवन की अंतरंग झाँकी सर्वत्र मिलती है। रामन नायर जी ने केरल के जन-जीवन को व्यापकता एवं सूक्ष्मता से देखा है और परखा है। केरल में व्याप्त गरीबी, शोषण, रीति-रिवाज़, विश्वास, रोज़ी जीवन आदि की अभिव्यक्ति मार्मिक ढंग से उनकी कहानियों में हुई है। आम आदमी की इच्छा, आकांक्षा, कुठा, संतोष, निराशा, घुटन आदि का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण उन्होंने किया है। 'क्या माफी नहीं दोगे'? में दस कहानियाँ शंकलित हैं - क्या माफी नहीं दोगे, तलाख़, शिथिल संबंध, नुक्सान के सिलसिले, वेतन का दिन, कुमारी, मुक्ति का बोध, सुहाग रात आदि।

'शिथिल संबंध' में जीवन में अकेले पड़े आदमी की व्यथा चित्रित हुई है तो 'तलाख़' में दांपत्य जीवन की शिथिलता का चित्रण हुआ है। 'क्या माफी नहीं दोगे' में प्रणय के दोनों भावों (तृष्णा-वितृष्णा) का चित्रण हुआ है। 'वेतन का दिन' में वेतन विहीन नारी का दुःख है तो 'नुक्सान के सिलसिले' में वेतन की चोरी होने का दुःख है। 'कुमारी' में अविवाहित युवती की पीड़ा का चित्रण हुआ है। इस प्रकार डॉ.एन.रामन नायर ने केरलीय जीवन से संबंधित प्रायः सभी पहलुओं का चित्रण किया है। गरीबी, बेरोजगारी, अंधविश्वास, बस यात्रा संगंधी उनकी कहानियों में केरल की प्राकृतिक विशेषता, जैसे हरियाली, वर्षा आदि जीवंतता के साथ उभरकर आयी हैं। उनका उद्धेश्य केरलीय संस्कृति एवं सभ्यता को प्रस्तुत करने का था। उन्होंने स्वयं कहा है - इन कहानियों द्वारा सुदूर-दक्षिण में स्थिति केरल के माहौल को उजागार करना मेरा उद्धेश्य है।[1] हिन्दी कहानी जगत को समृद्ध करने में तथा केरल का यश उत्तर भारत तक पहुँचाने में डॉ.एन.रामन नायर ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

१. क्या माफी नहीं दोगे - ड़ॉ.एन.रामन नायर, पृष्ट-६

(प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
सरकारी वनिता कॉलेज,तिरुवनन्तपुरम)

केरल में ऐसी कोई साहित्य विधा नहीं है, जो केरलीय हिन्दी लेखकों से अछूती रही है। यहाँ सभी विधा में श्रेष्ठ मौलिक तथा अनूदित रचनाएँ हिन्दी में प्रकाशित हुई हैं। यहाँ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कई हिन्दी लेखक हैं। विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त लेखक हैं ड़ॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा आदि।

सहायक ग्रंथ:

१. केरल की हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास-डॉ.पी.लता

२. केरल की हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास-डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

(प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, यूनिवेर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम)

केरल की सार्जनात्मक हिन्दी कविता

डॉ. जयश्री ओ.

केरल भारत का सुदूर दक्षिण प्रदेश है। यहाँ की भाषा मलयालम है। फिर भी हिन्दी में कुछ ऐसे तत्व हैं जो दक्षिणी भाषाओं के साथ उन्हीं का सम्बन्ध स्थापित करने को बाध्य कर देते हैं। भारतीय चिंतधारा, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा देश का अखंडताबोध जैसे तत्वों ने द्राविड भाषा-भाषी लोगों के मन में हिन्दी के प्रति एक लगाव पैदा कर दिया। केरल में हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य संपन्न होने लगा। केरल अपनी हिन्दी कविता-परंपरा केलिए महाराजा स्वातितिरुनाल के सामने सदा नतमस्तक हैं जिन्होंने ही केरल में हिन्दी काव्य परंपरा का नींव डाला। वे ही केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार हैं। ब्रजभाषा में लिखे गये उनके गीतों (47) में सरस्वती स्तुति, शिवस्तुति, रामवन्दना, कृष्ण-लीला वर्णन, पद्मनाभ स्तुति, विरहिणी राधा, सिंहासन पर विराजमान श्रीराम विरहिणी गोपियों का चित्र आदि समाहित हैं। चाहे बाल-लीला हो, चाहे विरह वार्ता हो या विनय-निवेदन प्रत्येक प्रसंग पर सरसता विद्यमान है। जैसे-

"मिलिये श्याम मेरे विरह मेरी ने राधिका जीवे।
लीजे सुन बात मेरी बाँसुरी बजैया।
छोड दीजो मान मैं तो जोडूँ हाथ वे।"

महाराजा स्वातितिरुनाल के बाद केरल की हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक लम्बा अंतराल दिखाई देता है। टी.के.गोविंदन टेलिचेरी, विमल केरलीय, श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी देवी, श्रीमती भारतीदेवी, श्रीती वी.अम्मिणी जैसे मनीषियों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी कविता को संपन्न कर दिया। उन लोगों ने गाँधिजी के आदर्शप्रेरक विचारों को रूपायित करना अपना ध्येय माना था। हरिजनोद्धार, ग्रामिण पुनर्निर्माण, अस्पृश्यता निवारण आदि तथ्यों को अपना काव्य विषय बनाया। साथ ही साथ सामाजिक विसंगतियों का स्वर भी उनके काव्यों की मुख्य पहचान रहा। टी.के.गोविन्दन टेलिचेरी ने "अछूत की आह" शीर्षक कविता में अस्पृश्यता को भयानक सामाजिक रोग के रूप से चित्रित किया है -

"दयानिधे, यह उच्चनीचता क्या तुम को भी भाती है?
अछूत कहानेवालों पर दया न तुम को आती है?
हाथों कुओं से जल भरने का हमें कहीं अधिकार नहीं।"

उसीप्रकार पं.नारायणदेव जो 'देव केरलीय' नाम से लिखते थे, उनका कवि-हृदय भी अपने चारों के प्रति सदा संवेदनशील रहता था।

"वर्तमान अजूबा मसला ..... वह है
दिल और दल में कौन है वरिष्ठ?
किसकी साख यानी रोब बड़ी है?"

दरिद्रता, उससे होनेवाला दुःख, वैदेशिक शासन से होनेवाली पीड़ा आदि श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी देवी के मन को सदा सताता रहा। उनकी 'आह्वान' शीर्षक कविता में युग का स्पंदन मिलता है।

श्रीमती भारतीदेवी की रचनाओं में तत्कालीन विसंगतियों के साथ-साथ स्वाधीनता की तीव्र अभिलाषा भी मुखरित है। इस काल की अन्य एक कवयित्री हैं श्रीमती वी.अम्मिणी। अपनी रचना द्वारा वह नारी जाति का पक्ष लेकर उनकेलिए वकालत करती है। उसका सन्देश है कि नारी किसी भी परिस्थिति में दुर्बल न हो।

स्वातंत्र्योत्तर युग में तत्कालीन भारतीय जन-जीवन को मूर्त करनेवाली कविताओं में श्री.विमल केरलीय की 'प्राणाम्बू' की विशेष पहचान है। उसमें जो दार्शनिक चित्रण है वह उनकी निजी विशेषता है।

इसप्रकार अनेक ज्वलंत समस्याओं को लेकर केरलीय हिन्दी कविता आगे बढ़ी। शोषितों की विवशता, सामाजिक विसंगतियाँ एवं श्रमजीवियों की दयनीय स्थिति तत्कालीन कविता के विषय बनीं।

केरल में हिन्दी कविता-लेखन की एक सुदृढ़ परम्परा स्वातंत्र्योत्तर युग में मिलती है। इस युग में हिन्दी कविता जगत को संपन्न करनेवाले महारथ हैं - सर्वश्री के.वासुदेवनपिल्लै, पी.नारायण, पं.नारायणदेव, एन.चन्द्रशेखरन नायर, आनन्दशंकर माधवन और पी.वी.विजयन आदि। इनकी कविताओं में केरल का प्रकृति-चित्रण, केरल का वैशिष्ट्य, मानवीय भावों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति, सामयिक समस्याओं का चित्रण, राष्ट्रप्रेम का गायन, भारतीयता का संस्पर्श, सामाजिक विसंगतियों की कांव्यात्मक उक्ति आदि को विशेष स्थान प्राप्त हुआ।

स्वर्गीय के.वासुदेवन पिल्लैजी यशस्वी हिन्दी प्रचारक और सक्षम संचालक के साथ प्रतिभावान कवि भी थे। केरलीय संस्कृति के प्रति वे सदा जागरूक थे और उसका उन्नयन करने में हमेशा तत्पर थे। केरल की महत्वगाथा हिन्दी भाषी जनता एवं बुद्धिजीवियों को अवगत कराने के उद्देश्य से उन्होंने 'केरल सतसई' नामक एक काव्य-रचना शुरू की। दुर्भाग्य की बात है कि वह पूरा नहीं हो सके। जितना लिखा गया संपादित करके श्री.के.वासुदेवन पिल्लै स्मृति ग्रंथ में प्रकाशित हुआ।

इस काल के और एक प्रमुख कवि हैं पी.नारायण (नरन)। उनकी कविता में राष्ट्रप्रेम का स्वर गूँज रहा था। उनका प्रथम काव्यसंग्रह 'जीने की ललकार' सन् १९८६ में प्रकाशित हुआ। उसीप्रकार वर्णाश्रम संबन्धी

प्रकृति रहस्यमयी माँ में प्रकृति चित्रण

पार्वती चन्द्रन

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर केरल के वरिष्ठ हिन्दी प्राध्यापक, नामी लेखक एवं चित्रकार हैं। आपका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, निबंध, आलोचना आदि विविध साहित्य-विधाओं में तूलिका चलायी है। नायरजी की मौलिक काव्य-रचनाएँ हैं - 'हिमालय गरज रहा है' (खण्डकाव्य), 'कविताएँ देशभक्ति की' (३५ राष्ट्रीय कविताओं का संकलन), 'चिरजीव' (महाकाव्य) 'निषाद शंका' (काव्य संकलन) आदी। 'प्रकृति रहस्यमयी माँ' (कविता) 'कविताएँ देशभक्ति की' संकलन की है।

लोक-व्यवहार में धरती-आकाश, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-झरने आदि प्रकृति के अर्थ में लिये जाते हैं। 'प्रकृति' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के 'Nature' शब्द के समान अर्थ में समझा जा सकता है। "परंपरा के अर्थ में समस्त बाह्य जगत् को उसके प्रत्यक्षीकरण की रूपात्मकता में और उसमें अधिष्ठित चेतना के साथ प्रकृति मान गयी है।"[1] हमारे जीवन का सूत्र प्रकृति के कण-कण से जुड़े हुए हैं। अज्ञेय कहते हैं "प्रकृति मानव का प्रतिपक्ष है, अर्थात् मानवेतर ही प्रकृति है।"[2] अज्ञेय यह भी कहते हैं कि "प्रकृति मानवेतर का एक अंश है"[3] यानी प्रकृति मानवेतर भी और उसका अंश भी है। नन्दकिशोर नवल के अनुसार, "प्रकृति एक निरपेक्ष सत्ता है, यानी अपने अस्तित्व केलिए वह किसी दूसरी वस्तु पर निर्भर नहीं है।"[4] इस प्रकार प्रकृति के अनेक सन्दर्भ और परिभाषाएँ देखने को मिलती हैं।

वस्तुत: दृश्यात्मक जगत् की वे वस्तुएँ, जो स्वत: उत्पन्न हुई हैं, जिनका निर्माण मनुष्य ने नहीं किया है और जिनमें नष्ट होकर भी आत्मनिर्माण

केरल की सार्वजनात्मक हिन्दी कविता.....

अवबोध 'भूल हो गयी एकलव्य' से नामक कविता में प्रकट किया गया है। इस काल की हिन्दी कविता को संपन्न किये अगले हस्ताक्षर हैं पं. नारायणदेव (देव केरलीय)। उनकी कविताओं के विषय भी वैविध्यपूर्ण थे। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं आरती, गाँधीसप्तक, तरंगिणी।

केरल के हिन्दी साहित्य जगत में श्री.चन्द्रशेखरन नायर ऐसे ही एक विलक्षण प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में समाज के शाश्वत जीवन-मूल्यों, युग जीवन की चेतना एवं मूलभूत सामाजिक समस्याओं का शब्दचित्र खींचा है। काव्य क्षेत्र में नायरजी एक सुचिंतित पथ के पथिक हैं और उनकी कविताओं के मुख्य स्वर भारतीयता के प्रति उनका अनुराग तथा देशप्रेम हैं। नायरजी धरती को अपनी माँ मानते हैं।

"अब तुझी से दूर भाग, जा रहा हूँ मैं मनुष्य,
खो रहा है प्रकृति माते संसार का भी भविष्य।"

उन्होंने 'चिरजीव' नामक महाकाव्य भी लिखा। केरलीय होकर भी भगलपुर में रहकर लिखी स्वर्गीय आनन्दशंकर माधवन की रचनाएँ दीपाराधना, वर्षा, घास के फूल, चित्रशाला, पल्लवी, जाह्नवी, संजीवनी वैतालिका, श्रीजिता आदि हैं। एम. श्रीधर मेनन की कविताओं का विषय आदर्शोन्मुख है। प्रिय का सन्देश, दिनान्त विश्राम, मेरी माँ भारतमाता, ऋषि का सन्देश, मृत्यु की खोज में आदि कविताओं की रचना करके आपने हिन्दी काव्यजगत् को संपन्न कर दिया।

डॉ. पी.वी.विजयन जी काव्य रचना 'कथ्य और तथ्य' को छोड़कर हम केरलीय हिन्दी काव्य साहित्य का मूल्यांकन नहीं कर सकते। उनके ही शब्दों में - "मैंने अपने जीवन के भोगे हुए क्षणों को जीवन-परिवेश में दृष्टिगत तथ्य साक्षात्कृत सत्य को यथासंभव वाणी देने का प्रयत्न किया है।"

उपर्युक्त सभी केरलीय हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा सुदूर दक्षिण केरल में एक काव्य वातावरण पैदा किया है। आज भी वह कार्य संपन्न हो रहा है। डॉ.सुनीता बाई (नया युग), डॉ.षण्मुखम (अधूरा मकान), डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ (रंग और गंध), जे.रामचन्द्रन नायर, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा, डॉ.एच. परमेश्वरन जैसे महान अपनी काव्य-साधना से हिन्दी काव्य जगत् को आज भी संपन्न कर रहे हैं।

सहायक ग्रन्थ:

१. *केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर*
२. *केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर*
३. *केरल क्षेत्रीय हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं.डॉ.भीमसेन निर्मल*
४. *हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।*

प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी - हिन्दी सेवी संस्था

दिव्या वी.एच

केरल में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार केलिए पहले दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी हिन्दी प्रचारक संस्थाएं स्थापित हुईं। केरल में हिन्दी साहित्य के पोषण केलिए व्यक्तियों की ओर से तथा हिन्दी प्रचारक संस्थाओं की ओर से पत्रिकाएँ भी निकाली गयीं। इनमें कई पत्रिकाएँ अल्पायु की रहीं। आजकल केरल में हिन्दी प्रचार संस्थाएं ही नहीं; कुछ साहित्य संस्थाएँ भी हिन्दी के विकास कार्य में ध्यान देती हैं। ऐसी संस्थाएँ हैं-केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, केरल हिन्दी साहित्य मंडल, राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी साहित्य संगम आदि।

'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' की स्थापना १६ जून १९८२ को डॉ.एन.चन्द्रशेखर नायर ने की। पहले इसका नाम 'केरल हिन्दी साहित्य परिषद' था। पंजीकरण के समय नाम बदलकर 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' रखा गया।

'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' की मुख्य पत्रिका है 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका'। इसका पहला अंक २ अक्तूबर १९९६ को निकला। यह त्रैमासिक पत्रिका नियमित रूप में निकल रही है। इसका विशेषांक भी निकलता है।

यह अकादमी प्रतिवर्ष वार्षिक सम्मेलन चलाती है, जिसमें साहित्यकार तथा सांस्कृतिक पुरुष भाग लेते हैं। इस सम्मेलन में कॉलेज के छात्रों को निबंध रचना प्रतियोगिता चलाकर पुरस्कार दिये जाते हैं। यही नहीं, अच्छी

प्रकृति रहस्यमयी माँ में प्रकृति चित्रण....

और आत्मविस्तार करने की क्षमता है, वे सब प्रकृति के अंग हैं। वन-पर्वत, नदी-झरने, फूल-फल-पत्तियाँ, खेत-मैदान, धरती-आकाश, तारे-नक्षत्र, ऋतुओं के सारे व्यापार आदि प्रकृति के अंग हैं, किन्तु भवन, मशीन, कारखाने आदि नहीं। क्योंकि, जहाँ पहली श्रेणी में चर्चित वस्तुएँ प्रकृति के मूल तत्व हैं, वहाँ दूसरी श्रेणी की वस्तुएँ मनुष्य-निर्मित हैं। यद्यपि दोनों ही श्रेणियाँ दृश्य-जगत् में हैं। वस्तुतः मनुष्य प्रकृति की सत्ता और उसके सौन्दर्य के निर्माण में योग भर दे सकता है, स्वयं उस सत्ता और सौन्दर्य का निर्माण नहीं कर सकता।

प्रकृति पारिस्थितिकी का अभिन्न अंग है। 'प्रकृति रहस्यमयी माँ' कविता में कवि चन्द्रशेखरन नायर जी प्रकृति माता की सुषमा एवं रहस्यात्मकता का परिचय देते हैं। कवि बताते हैं, रंग-विरंगे फूलों के मधुर-मधुर मुस्कुराहट से रोमांचित होना इस धरती का पुण्य है। नवल-नवल सुखद ऋतुओं के विकास से तन-मन मुग्ध होकर सारे चराचर पुलकित बन जाते हैं। सारी पारिस्थितिकी हर्षोत्माद में विस्मृत बन जाती है। कवि के शब्दों में-

"मुग्ध हुआ तन मन चराचर सारा पुलकित बन
हर्षोन्माद में विस्मृत बन मान गया, यह सुन्दर है जीवन!"[5]

आगे कवि प्रकृति की ओर नज़र डालकर सूर्योदय, मध्याह्न, भाप, वर्षा, नदियाँ, ऋतु-परिक्रमा आदि के बारे में बताते हैं। प्रातः काल में चारों दिशाओं में ज्वाला फैलाती होमकुंठ-सी प्रतीत होती लाल चादर की परतें मध्याह्न में प्रचण्ड होकर चराचर को झुलसाती है। अतः प्रकृति करुणार्द्र होकर भाप को पावस में परिणत कर देती है। लगता है, दिनकर ने अपने नीति में बदलाव ला दिया हौ।

बादल नील घड़ों में भरे अमृत की वर्षा कर नदी एवं धरा के सब जीवों का मन हर्षाते हैं। इसी ऋतु-परिक्रमा में जीवन का राज़ छिपा है, जो पारिस्थिति का आधार है, इसीमें प्रकृति की महिमा है। इसलिए कवि गाते हैं-

"क्या जाने प्रकृति की महिमा
नित्य नूतन रहस्यमयी माँ!!"[6]

मनुष्य का जीवन प्रकृति पर निर्भर है। वस्तुतः उसके अस्तित्व केलिए प्राकृतिक परिवेश अनिवार्य है। इसलिए हमारे दर्शन में प्रकृति को मूल कारण कहा गया है। संपूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति उसीसे मानी गयी है। प्रकृति रहस्यमयी माँ जैसा चित्रण करनेवाली प्रस्तुत कविता हिन्दी काव्य-जगत को नायर जी की अनुपम देन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

१. डॉ.नरनारायम तिवारी - 'हिन्दी कहानी में प्रकृति चित्रण'-पृ.सं.१७
२. सच्चितानन्द हीरानन्द वात्स्यायन आज्ञेय 'कवि-दृष्टि'-पृ.सं.५१
३. वही - पृ.सं.५१
४. नन्दकिशोर नवल - 'कविता की मुक्ति'-पृ.सं.४१
५.डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर-'कविताएँ देशभक्ति की-प्रकृति रहस्यमयी माँ'-पृ.सं.६७
६. वही, पृ.सं.६८

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, सरकारी वनिता कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

हिन्दी साहित्य सेवी डॉ. एन.पी.कुट्टन पिल्लै

राखी एस.आर.

स्वर्गीय डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै के नाम के इंशियल का विस्तार है नटुवत्तूर किषक्केतिल पत्मनाभन। उनका जन्म २९ अगस्त १९३५ को तट्टयिल नामक गॉव में हुआ। उन्होंने कई उपाधियाँ प्राप्त की हैं, जैसे एम.ओ.एल. (उसमेनिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद), हिन्दी विद्वान (केरल विश्वविद्यालय), भारतीय हिन्दी पारंगत (अखिल भारतीय हिन्दी परिषद, आगरा), शिक्षणकला प्रवीण (अखिल भारतीय हिन्दी परिषद, आगरा)। जन्म से केरलीय होकर भी उनका सेवा-क्षेत्र हैदराबाद था।

डॉ.एन.पी. कुट्टन पिल्लै का साहित्यिक व्यक्तित्व बहु आयामी है, जैसे - समीक्षक, पत्रकार, संपादक, अनुवादक, कोशकार, वैयाकरण, इतिहास लेखक आदि। उन्होंने मौलिक रन्चनाएँ कीं, कई श्रेष्ठ अनुवाद भी किये। प्रकाशित मौलिक ग्रंथ इस प्रकार हैं - आलोचना-प्रसाद और कामायनी (१९५९), पंतः छायावादी व्यक्तित्व और कृतित्व (१९७०), पंत काव्य में बिंब-योजना (१९७४), संत कबीर (१९७५), अध्ययन और अनुसन्धान (१९७५), अध्ययन और अनुशीलन (२०००), कैरली वैभव (१९७५), केरलः साहित्य और संस्कृति (१९७९) काव्य बिंब (१९८२), छायावादी बिंब-विधान और प्रसाद (१९८३), हमारे ऋषि-मुनी (तीन भाग, २००४), विचार वीथिका (२००५), समीक्षा लोक (२००५), भारतीय संस्कृति और अध्याय (००८), छायावादी कवियों का प्रदेय (२०११) आदि। निबन्ध-प्रबंध प्रदीप (१९६३), षियार्थी और निबन्ध (१९७३), पौराणिक आख्यान (१९९७), विचार और विपृति (२००१), हमारे तीर्थ पुराणों के झरोखे से (२००२) आदि। व्याकरण-तुलनात्मक व्याकरणः हिन्दी व मलयालम (१९५९), सरल हिन्दी व्याकरण तथा रचना (१९६१), बाषा प्रयोग ९१९९८), मिलिन्द हिन्दी व्याकरण (२००५) आदि। इनमें भाषा प्रयोग हिन्दी भाषा की समस्याओं तथा उनके समाधानों पर तैयार की गयी बहुचर्चित पुस्तक है। कोश-हिन्दी पर्याय कोश (१९७७), पौराणिक संदर्भ कोश (१९८४), पौराणिक संदर्भ कोश-परिहिद (१९९०), बृहत हिन्दी-हिन्दी तेलुगु कोश (२००५), संक्षिप्त हिन्दी-हिन्दी-तेलुगु कोश (२००५), विद्यार्थी हिन्दी-हिन्दी तेलुगु कोश (२००५), नीलकमल अभ्यतन हिन्दी शब्द कोश (२०१२), नीलकमल संक्षिप्त हिन्दी शब्द कोश (२०१२) आदि। केरल के हिन्दी कोशकारों में वैविध्यपूर्ण तथा सर्वाधिक कोश डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै ने तैयार किये हैं। उनके 'पौराणिक संदर्भ कोश' बहुचर्चित है।

डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै ने कई अनुवाद किये हैं। उनमें से कुछ हैं-ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता एम.टी.वासुदेवन नेयर के 'कालम्' उपन्यास का उसी नाम से अनुवाद तथा ओ.एन.वी.कुरुप की चुनी हुई कविताओं का 'दर्शन' नाम से अनुवाद आदि।

सहायक ग्रंथः

१. *केरल की हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास - डॉ.पी.लता।*
२. *केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर*
३. *डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै का साहित्य - पी.कीर्तिकुमार*
४. *हिन्दी साहित्य साधक डॉ.कुट्टन पिल्लै - डॉ.विजयवीर विद्यालंकार*

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
सरकारी वनिता कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

मौलिक साहित्य रचना तथा श्रेष्ठ शोध प्रबन्ध को 'एस.बी.टी. पुरस्कार' भी दिये जाते हैं। केरल के कई व्यक्तियों ने ये पुरस्कार पाये हैं।

इस अकादमी के संस्थापक तथा अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर स्वयं एक साहित्यकार हैं। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने प्रायः सभी साहित्य विधाओं में तूलिका चलायी है। उन्हें कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। सन २०१५ के विश्व हिन्दी सम्मेलन में उन्हें 'विश्व हिन्दी पुरस्कार' भी प्राप्त हुए।

अकादमी में एक हिन्दी पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में सभी साहित्य विधाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

यह संस्था प्रतिवर्ष १४ सितंबर को 'हिन्दी दिवस' तथा १० जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाती है। यही नहीं, इस संस्था के द्वारा प्रतिवर्ष दो-तीन संगोष्ठियाँ चलायी जाती हैं। इन संगोष्ठियों में विविध कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तथा शोध छात्र आलेख प्रस्तुत करते हैं। ये आलेख शोध-पत्रिका में प्रकाशित किये जाते हैं।

केरल में हिन्दी साहित्य के विकास में यह संस्था स्तुत्य कार्य कर रही है।

सहायक ग्रंथः

१. *केरल की हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास - डॉ.पी.लता*
२. *केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - डॉ.ई.विश्वनाथ अय्यर*

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, सरकारी वनिता कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

संस्कृति के स्वर में केरलीय संस्कृति

रंजिता राणी

"संस्कृति मानव द्वारा श्रेष्ठ साधनाओं की तलाश है। परिवेश और इतिहास इसके परिपोषक हैं, साहित्य एवं कला इसके संबन्धक व संरक्षक।"[१]

'संस्कृति के स्वर' सुविख्यात लेखिका व अनुवादक डॉ.एस.तंकमणि अम्मा द्वारा रचित चौदह निबंधों का संकलन है, जो सन् १९८८ ई में प्रकाशित हुआ।

प्रथम निबंध 'संस्कृति के स्वर' में ही केरलीय जनता द्वारा धार्मिक लेन-देन की मिसाल के तौर पर उत्तर के बद्रीनाथ मंदिर में केरलीय नंपूतिरियों का नियुक्त होना, गोसाइयों द्वारा केरल के दौरे पर निकलना इत्यादि का सजीव वर्णन है।

लेखिका ने 'ऋग्वेद', 'रामायण', 'महाभारत', 'इण्डिका' जैसी कालजयी कृतियों में केरल के शाश्वत सान्निध्य को सप्रमाण अंकित किया है। 'केरल' जहाँ 'केरवृक्षों' का आधिक्य है। केरल की भाषा 'मलयालम' है, जिसकी उत्पत्ति 'मल' याने पहाड और 'अलं' (देश) या फिर 'आलं' (सागर) से बनाया गया है। उक्त भाषा पर विचार करते हुए लेखिका कहती हैं कि यूँ तो यह मूलतः द्राविड़ भाषा की उपज है, परंतु यह केरलीय परिवेश में रूपायित होकर स्वच्छंद रूप से विकास को प्राप्त भाषा है।

इस संकलन में ओणाप्पाट्ट, तुम्पिपाट्ट, कल्याणप्पाट् आदि केरलीय कृषि, उद्योग, धर्म, विनोद, भक्ति से संबन्ध आदिकालीन लोकगीतों की मनोहारी झाँकी प्रस्तुत की गई है। अय्यप्पनप्पाट्, वावरुपाट्टु व ऐतिह्य हिन्दू-मुस्लिम मैत्री की महिमा गाते हैं।

यहाँ प्रचलित 'मणिप्रवालम' शैली भाषाई संस्कृति के समन्वय को उजागर करती है। इस शैली में रचित चरित-चम्पू काव्यों में विविध रसों का हृदयहारी समन्वय दृष्टिगोचर होता है। लेखिका इनमें हिन्दी के संदेशरासक का साम्य देखती हैं।

भारती की प्रांतीय भाषाओं में 'भगवद्गीता' का सर्वप्रथम अनुवाद मलयालम में माधव पणिक्कर द्वारा किया गया। 'भारतमाला' महाभारत का स्वच्छंदानुवाद है, जो शंकर पणिक्कर की सर्जना है। 'वाल्मीकि रामायण का निचोड' कण्णश रामायण के रचयिता रामपणिक्कर का भी विशेष उल्लेख लेखिका ने किया है।

सात्विक भक्त, ज्ञानी महात्मा तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन के स्तुत्यगीत अथवा

"सानन्द रूपं सकल प्रबोध, आनन्ददानामृत पारिजातं,
मनुष्य पद्मेष रविस्वरूपं, प्रणौमि तुञ्चत्तेषुमार्यपादं।"[२]

इसका गायन कर लेखिका कवि के जन्मस्थल, उसकी स्थिति, संस्कृति आदि का हृदयंगम वर्णन पेश करती हैं। "मलबार के पोन्नानी जिले के तिरुर गाँव के रेलवे स्टेशन से एक मील की दूरी पर तृक्कटियूर गाँव में बसे शिवमंदिर के पश्चिम की ओर तुंचनपरंपु है।"[३]

किसी संस्थान पर पहुँच जाने को इस तरह का वर्णन तीर्थयात्रियों के लिए काफी सहायक है, सांस्कृतिक रुझान रखनेवालों केलिए दिलचस्प भी। इस संदर्भ में लेखिका यहाँ की प्रथा जैसे-बाल उँगलियों को थामकर विद्यारंभ कराते रेत पर लिखवाने, कुचले पेड जो अपना सहज कडुवापन खो बैठा है, यूँकि जिसके तले बैठकर कवि ने रामायण (मलयालम) का प्रणयन किया था आदि की बात छेड़ती है।

लेखिका के शब्दों में प्रस्तुत है केरल की प्राकृतिक सुषमा का चित्र-"भारत के सुदूर दक्षिणी छोर में स्थित एक छोटा-सा सुंदर प्रांत है केरल। उसके पूरबी ओर गगनचुंबी चोटियोंवाला सह्य पर्वत है जिसपर स्थित घने जंगलों में तथा घाटियों में विविध प्रकार की वन्यजातियों का बसेरा है।"[४] उस पर जनजातीय संस्कृति, उनके बीच प्रचलित रामकथा के विकृत रूपों का सुरम्य चित्र लेखिका ने विस्तारपूर्वक निबंधों में दर्ज किये हैं। इन रामकहानियों में रघुपति राघव वन्यजातियों के 'राम' के रूप में उभरते हैं।

उत्तर में जैसे श्रीनाथ मंदिर है, जहाँ से सूरदास की भाँति भक्ति के अजस्र स्रोत के वाहक उभर आये उसी तरह केरल के 'गुरुवायूर' में विस्थापित श्रीकृष्ण मंदिर से 'मेल्पत्तूर नारायण भट्टतिरि', 'विल्वमंगलम स्वामियार', 'पून्तानम' आदि कवियों का आविर्भाव हुआ। इन कवियों के बारे में लेखिका का कहना है, कि "उनके भक्तिनिर्भर हृदय से जो वाणी निसृत हुई उसने केरल के भक्ति साहित्य को परिपोषित करने में बड योग दिया था।"[५]

रामलीला, रासलीला जैसे संपूर्ण भारत के लोकनाट्यों की चर्चा करते हुए लेखिका ने केरल की नैसर्गिक लोक-कलाओं व नृत्यों की सेज सजायी है, जिसके अंतर्गत, ऐवर नाटकं, चविट्टु नाटकं, तेय्यम, करांगुलियों भृकुटियों से अभिनीत कथकलि व उसके साहित्य, कुंचन नंपियार की कृतियों में छिपी केरलीयता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। परंपराओं के प्रति लगाव, वहीं नवीन मूल्यों को ग्रहण करने की क्रांतदर्शिता से युक्त आधुनिक मलयालम साहित्य का सर्वांगीण चित्रण प्रस्तुत करने में निबंधकार सफल हुई हैं। फिर विश्वमानवता की धड़कनों को वाणी देनेवाले मलयालम कथाकार तकषि शिवशंकर पिल्लै के साहित्यिक व्यक्तित्व का सम्यक परिचय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

10-वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन एक पुरस्कृत साहित्यकार की कथा

डॉ.एन. सुन्दरम

१०-वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन २०१५ सितंबर १०, ११, १२ को भोपाल में धूमधाम से कोलाहल पूर्वक संपन्न हुआ। विश्व भर के एक हज़ार के अधिक प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त स्थानीय तथा अन्य प्रबुद्ध साहित्यकार भी सम्मिलित हुए। कुल मिलाकर १० हज़ार से अधिक साहित्यकारों ने इस सम्मेलन में भाग लिए। तीनों दिन साहित्यकारों की उपस्थिति से कार्यक्रम बहुत भव्य रहा।

इस सम्मेलन में साहित्येतर विषयों पर ही चर्चा हुई। कुल बारह सत्रों में निम्नलिखित विषयों पर गंभीर चर्चा हुई-

भाषा की विदेश नीति में हिन्दी; विदेशों में हिन्दी; हिन्दी शिक्षण दक्षिण भारत-हिन्दी कल आज और कल; अनुवाद, सूचना, प्रौद्योविकी मीडिया; प्रशासनिक प्रयोजनमूलक राजभाषा; बाल साहित्य; इन्टर्नेट पर हिन्दी आदि विभिन्न विषयों पर इन सत्रों में गंभीर चर्चा हुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, विदेश एवं प्रवासी भारतीय कार्य राज्य मंत्री और अन्य कई विभाग के मंत्रियों ने इसमें सक्रिय सहयोग दिया। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान तीनों दिनों के कामों में अहम भूमिका निभाई। केन्द्र सरकार के गृहमंत्री श्री.राजनाथ सिंह ने पुरस्कार सम्मेलन में भाग लेकर सम्मेलन के कार्यक्रम को सफल बनाया।

बारह सितंबर शाम को तीन बजे पुरस्कार सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में एक नई करवट की बारी आई। पुरस्कृत सभी विद्वानों को मंच पर बिठाया गया। देश-विदेशों के चालीस से अधिक वयोवृद्ध साहित्यकार मंच पर कतार में बिठाए गए। अकारादि क्रम से एक-एक पुरस्कृत साहित्यकार बुलाए गए। मुख्य मंत्री शिवराजसिंह चौहान और केन्द्र सरकार के गृहमंत्री उन दोनों के सान्निध्य में पुरस्कृत विद्वानों को अंगवस्त्र, शॉल, पुरस्कार चिह्न के रूप में

संस्कृति के स्वर में केरलीय संस्कृति....

निबंधकार द्वारा प्रयुक्त हरेक शब्द कैरली की जुबानी बोलता हैं, लगता है ज्यूँ साँचे में डालकर इसे ख़ास तौर पर उक्त संस्कृति के प्रचार हेतु ढाला गया है। वर्णनात्मक शैली में लाक्षणिक प्रयोग यथा "(मलयालम काव्य के संदर्भ में) पहले पुरानी बोतल में नव्य मधु भर दिया जाता है। फिर शनैः शनैः बोतल ही बदल दी जाती है"[६] दृष्टिगोचर होते हैं।

लेखिका के शब्दों में, "प्रस्तुत लघु कृति में केरल की अस्मिता की पहचान कराने में सक्षम उसकी प्राचीन एवं अधुनातन कलाओं व साहित्यरुपों में अन्तर्लीन संस्कृति के स्वर को हिन्दी के माध्यम से गुंजायमान करने का यत्किंचित प्रयास किया गया है।"[७] अतः इसमें उल्लिखित 'संस्कृति के स्वर' केरल के अपने हैं।

मूलग्रंथ: *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; चेम्पका प्रिंटर्स, केशवदासपुरम, तिरुवनन्तपुरम प्रकाशन: १९८८*

संदर्भ:

१. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृ.सं.१*
२. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृष्ठ.३७*
३. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृष्ठ.३८*
४. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृष्ठ.६०*
५. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृष्ठ.८६*
६. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; पृष्ठ.११९*
७. *संस्कृति के स्वर; डॉ.एस.तंकमणि अम्मा; आमुख*

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

डॉ.बालशौरि रेड्डी का निधन

१५ सितंबर को हिन्दी और तेलुगु के प्रख्यात साहित्यकार और चंदामामा के पूर्व संपादक डॉ.बालशौलि रेड्डी का निधन हो गया। उनका जन्म १ जूलाई १९२८ को आंध्राप्रदेश के कडप्पा जिले के गोल्लर गुडूर में हुआ था। वे दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन, भोपाल में हमारे साथ थे। शोध दिशा परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अप्रित की जाती है।

लघुकथा

भगवान की चोरी

उर्मि कृष्ण

कल रात हुई चोरी केलिए कालीचरण बहुत दुःखी था। एक स्वर्ण कंगन और कुछ कपड़ों की चोरी की रपट पुलिस तक ने न लिखी। उलटे उस गरीब का मजाक उड़ाया था। ग्यारह सौ रुपया महीना पर बनिये के यहां नौकरी करते हो। तुम्हारे घर में सोने का कंगन कहाँ से आया? पीतल का होगा। सोने का समझे बैठा है।

कालीचरण ने बहुत कहा कि वह मेरी माँ ने बहू को दिया था। मेरी मां तो बड़े घर की बेटी थी उसे अपनी माँ से एक क्या दो-दो कंगन और नाक की नथ भी मिली थी।

- जा-जा बहुत सुनी हैं ऐसी कहानियां। पुलिस वाले ने उसे भगा दिया था।

चारों ओर से दुःखी और असहाय कालीचरण सांझ को देवी मंदिर पहुंचा था। हे माँ भवानी अब तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है। कंगन न मिला तो लड़की की शादी में क्या दूंगा? आधा किलो चीनी तो एक साथ नहीं ले सकता, सोना कहाँ से खरीदूंगा। मुझ पर नहीं, हे दुर्गा माँ तू अपने ही रूप मेरी कन्या पर तो दया कर दे।

विचाररों में खोया जैसे ही वह मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ने को हुआ एक पुलिस वाले ने लाठी से उसे रोक दिया।

- क्यों भाई भगवान के, भवानी के द्वार भी बंद हो गए क्या? यह मंदिर तो इतना प्राचीन है, इसके द्वार तो मैंने कभी बंद नहीं देखे।

- भैया सारे नगर में शोर है तुम्हें अभी तक पता ही नहीं चला।

- ऐसा क्या गजब हो गया भाई?

- हाँ गजब ही हुआ है। जिस मूर्ति को हम तो क्या हमारे दादे-परदादे भी पूजते थे, कल रात कोई उसे उठा ले गया।

कालीचरण सिर पकड़कर वहीं बैठ गया। हे मैया तेरे सहारे तो हम जिंदा थे।

10-वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन एक पुरस्कृत साहित्यकार की कथा...

शंख और एक साधारण कागज़ पर छपे एक सम्मान-पत्र आदि दिए गए। इस पुरस्कार वितरण में भाग लेकर सभी साहित्यकारों के मन में बहुत क्लेश हुआ। इनमें पंद्रह से अधिक साहित्यकार विदेशी थे।

उनके मन में क्लेश क्यों हुआ? इतने बृहत् सम्मेलन में पुरस्कृत विद्वानों का यह उपेक्षा भाव असहनीय रहा। कारण कुछ इस प्रकार हैं।

१. पुरस्कृत विद्वानों का एक परिचय पुसतिका वितरित नहीं की गयी। देश-विदेश के सभी साहित्यकारों के बहुमूल्य हिन्दी सेवा के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है। चालीस पन्नों में इन सबकी सेवाओं का संक्षिप्त में छाया-चित्र के साथ वितरित करते तो कितना अच्छा होता। एक छोटी-सी संस्था भी पुरस्कार वितरण को बहुत सुंदर ढंग से चलाती हैं।

२. सम्मानित विद्वानों को मंच पर बिठाकर गौरव के साथ पुरस्कार दिया जाना चाहिए। सबको खड़े-खड़े पुरस्कार देकर जल्दी-जल्दी कार्यक्रम को समाप्त किया। यह अशोभनीय घटना थी। सबके सब वयोवृद्ध साहित्यकार थे। इस पुरस्कार वितरण को देखकर ऐसा लगता था मानो वे अपने नियमित का भार निभा रहे हैं।

३. पुरस्कृत सभी साहित्यकारों ने हिन्दी के लिए अपना सारा जीवन समर्पित किया है। यह पुरस्कार पुरस्कृत साहित्यकारों के लिए अजीवन सेवा का एक स्मृति-चिह्न है। पुरस्कृत विद्वानों को छाया-चित्र अवश्य मिलना चाहिए। उसकी व्यवस्था ही नहीं की गई।

पुरस्कृत विद्वानों में बानबे वर्ष के साहित्यकार डॉ.चन्द्रशेखरन जैसे अनेक विद्वान उपस्थित थे। अधिकतर विद्वानों ने अकथनीय कष्ट सहकर सम्मेलन में भाग लिया। सब वयोवृद्ध साहित्यकार यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि उनको कुछ आर्थिक सहायता भी मिलेगी। करोड़ों में सम्मेलन का खर्च हुआ। इन चालीस साहित्यकारों को कुछ धन-राशी देने पर सम्मेलन के खर्च में कमी नहीं पड़ेगी। वे सभी साहित्यकार जीवन के अंतिम पड़ाव में हैं। पुरस्कार के रूप में कुछ धन-राशि भी मिलती तो वे बहुत खुश हो जाते।

सम्मेलन में यह सूचना मिली कि अगला सम्मेलन मोरिशियस में सम्पन्न होनेवाला है। हम सभी साहित्यकार यही चाहते हैं कि आनेवाले विश्व हिन्दी सम्मेलन में उपरोक्त बिंबों पर अवश्य ध्यान देकर आकर्षित रूप से इन्हें कार्यान्वित करें। आदरणीय प्रधान-मंत्री नरेन्द्रमोदी के शब्दों में सम्मेलन में भाग ले रहे विद्वान हिन्दी के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूल-मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के प्रसार पद पर अग्रसर होंगे। ●

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों में स्त्री विमर्श

डॉ.पंडित बन्ने

डॉ.नायर जी अहिंदी भाषी हैं। लेकिन हिन्दी भाषा तथा साहित्य की प्राणधारा को उन्होंने गहराई से आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरी आस्था है। डॉ.नायरजी का कथा साहित्य एक निश्चित उद्देश्य लिए पाठकों में भारतीय संस्कृति की गूँज स्पंदित करने में प्रयासरत है। साहित्य और कला दोनों की धुरी में भारतीय संस्कृति के पहिये लगाकर डॉ.नायर जी ने आदर्शमय जीवन को गति देने का उदार यत्न किया है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है भारत की आध्यात्मिक परंपरा एवं चिरंतन मानवीय मूल्यों का वैज्ञानिक युग की पृष्ठभूमि में प्रतिस्थापना। भारतीय चिर पुरातन संस्कृति के महान आदर्श, त्यागमय भोग, नारी की दिव्यता, अनेकता में एकता आदि उनके साहित्य में अनुस्यूत है। पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन को भी ड़ॉ.नायर जी ने अपने साहित्य का अंग बनाया है। कहानीकार नायर जी काफी आशावादी प्रतीत होते हैं। साथ ही सामाजिक संदर्भों के द्रष्टा भी हैं। हमारी संस्कृति की समाज सापेक्ष यथार्थ समसायिकता के आधार पर उन्होंने कहानियों के द्वारा स्पष्ट किया है।

'हार की जीत' कहानी का मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। भारतीय नारी के व्यक्तित्व को उजागर करनेवाली मायादेवी अपने व्यक्तित्व की गरिमा से अपनी हार को जीत में परिणत कर देती है। अपनी पत्नी मायादेवी को कवि सुश्री की कविताओं की ओर विशेषतः उन्मुख देखकर उनका मन शंकाग्रस्त हो उठता है। अपनी पत्नी से बिना कुछ कहे उसे छोड़कर चला जाता है। राजा द्वारा की गई अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। पति के प्रति उसकी निष्ठा उसके कथन से व्यक्त है - "महाराज तो मेरे लिए परमेश्वर सदृश्य है। इस उम्र में उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय में नहीं पड़ी है। पुण्य से ही वे मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये। पर आज वह अस्वस्थ हैं, यह मैं कैसे देख सकूँगी।" (हार ती जीत-डॉ.नायर, पृ.२८-२९)

इस अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी पतिनिष्ठा को प्रमाणित करती है। प्रत्येक पुरुष की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी पतिव्रता हो जो कदाचित संस्कृति के अनुरूप ही है। रानी की पतिनिष्ठा उसकी हार को जीत में परिणत कर देती है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माध्यम से कहानीकार ने चित्रित किया है।

'कान्ह गायब हो गया' कहानी की लता वयस्क होती नवयुवती का चरित्र है। मातृहीन पुत्री को कलाकार पिता आनंद लाड़-प्यार से पालता है। वही समाज के पाखंडी पुजारी मंदिर जैसे पवित्र पावन तीर्थ पर उसे छेड़ने का प्रयास करते हैं। बेटी की मनोदशा देख्र पिता आनंद कुछ-कुछ अनुमान लगा लेता है और धर्म के ठेकदारों के इस अनुचित व्यवहार पर क्रोध से भर जाता है। धर्म के ठेकेदारों के अनाचार को सभी भक्तों के समक्ष प्रस्तुत कर अपने जीवन में व्याप्त वेदना को हल्का कर धीरे-धीरे अपनी बेटी के सुखमय भविष्य की चिंता में वह कलाकार बाप अपनी कुटिया में लौट आता है।

यहाँ धार्मिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना कहानीकार का उद्देश्य रहा है। ड़ॉ.नायर द्वारा कहानी के माध्यम से नारी की सुरक्षा पर इसमें विचार किया गया है।

'चमार की बेटी' कहानी में भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या अनमेल विवाह का चित्रण है। पंद्रह साल की अल्हड़ किशोरी प्रतिभाशाली कुंती को उसका पिता दहेज न दे सकने के कारण एक बूढ़े से शादी कराने की विवशता में है। अपने सामने कोई मार्ग न होने कर कुंती अपनी अदम्य इच्छाओं को तजकर गंगा की पवित्रता में लीन हो जाती है। कहानीकार ने घर और समाज में नारी की बुरी हालत को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'भवोति अम्मा' कहानी का नारी पात्र भवोति अम्मा है। कहानीकार का उद्देश्य इस नायिका का रेखाचित्र खींचना नहीं है, पाठकों को उसके बाहरी रूप को भेदकर अंतरंग में स्थित वेदना, ममता आदि का परिचय कराना है। पतिविहीन भवोति अम्मा स्वाभिमानी है जो दूसरे के सम्मुख हाथ पसारने को तैयार नहीं है। अपने बच्चों को गाली देना तथा मारना-पीटना उसके नित्य क्रम में शामिल है। भवोति अम्मा का यह विकृत रूप समाज की ही देन है। समाज ने कभी उसकी विपन्नता पर तरस नहीं खाया और चार पितृहीन बच्चों की माँ निराशा और अभावों में जीवन जीती रही। उसकी बाहरी विकृतियाँ उसके भग्न हृदय से ही उद्भूत है। वोट माँगने आये नेताओं से कहती है - "अरे भाई तुम लोग क्यों मारे-मारे फिर रहे हो? तुम्हें वोट चाहिए? किसके लिए? खूब रहा? मेरा वोट पाकर तुम शासन खूब कर चुके हो। आए हो, शरम नहीं आयी तुम्हें। मेरे दो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मरे तब किसी कुत्ते को इस ओर झांकते नहीं पाया। मैंने अकेले अपने बच्चों को दफना दिया।" (भवोति अम्मे,

जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ

डॉ.सुशीलकुमार

द्विवेदी युग से अपनी काव्य-रचना का आरम्भ करनकेवाले महाकवि जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनकी कृति कामायनी एक कालजयी रचना है, जिसमें छायावादी प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का समावेश हुआ है। अन्तर्मुखी कल्पना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रसाद के काव्य की मुख्य विशेषता रही है।

प्रसाद छायावादी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि रहे हैं। प्रेम तथा सौन्दर्य इनके काव्य का प्रमुख विषय रहा है, किन्तु इनका दृष्टिकोण इससे भी विशुद्ध मानवतावादी रहा है। इन्होंने अपने काव्य में आध्यात्मिक आनन्दवाद की प्रतिष्ठा की है। ये जीवन की चिरन्तन समस्याओं का मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित समाधान ढूँढने के लिये प्रयत्नशील रहे। इनका दृष्टिकोण था कि इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया का सामंजस्य ही उच्चस्तरीय मानवता का परिचायक है।

कविवर जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं की विवेचना हम निम्नलिखित बिंदुओं के अन्तर्गत कर सकते हैं-

१. भावपक्षीय विशेषताएँ-

(क) प्रेम और सौन्दर्य दर्शन - प्रसाद जी विश्व के प्रत्येक अवयव में अनन्त सौन्दर्य के दर्शन करते है। उन्होंने प्रेम की स्वस्थ, सूक्ष्म और हृदयस्पर्शी अभिव्यंजना अपने अनेक काव्यग्रंथों में की है। 'कामायनी' और 'आँसू' में प्रेमानुभूति पर आधारित इसी प्रकार के अनेक चित्र प्राप्त होते हैं-

"जल उठा स्नेह दीपक सा, नवनीत हृदय था मेरा,
जब शेष धूम रेखा से, चिनित कर रहा अंधेरा।"[१]

(ख) श्रृंगारिकता - द्विवेदी युग में श्रृंगार के प्रति कटु एवं तीव्र घृणा दिखाई देती है। छायावादी युग में उसकी घोर प्रतिक्रिया के रूप में अधिकांश कवि श्रृंगारमयी रचनायें करने लगे, परन्तु इस काव्य में रीतिकालीन श्रृंगार जैसी स्थूलता नहीं थी। कामायनी में श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसे नित्य-यौवन की छवि से दीप्त, विश्व की करुण कामनामूर्ति हृदय की सौंदर्य प्रतिमा, वासना की मधुर छाया, पूर्ण काम की प्रतिमा आदि कहा है। इन वर्णनों में 'कहीं' भी स्थूल एवं पार्थिव श्रृंगार अथवा कामुकता या विलासिता के दर्शन नहीं होते; यथा-

"नित्य यौवन छवि से हो दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति,
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्तिन।"[२]

(ग) आध्यात्मिक रहस्यवाद - प्रसाद जी के काव्य में हमें विभिन्न स्थानों पर रहस्य-भावना के दर्शन होते हैं। रहस्यवाद के

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों में स्त्री विमर्श....

पृ.३२) कहानीकार की दृष्टि में अपराधी वह समाज और सासन है जिसने मानव को भूख और क्षोभ से मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया है।

'अजन्ता का कलाकार' कहानी में कुलीन वर्ग की नारी और एक गरीब चित्रकार के बीच में जो वर्ग संघर्ष है, इसका चित्रण हुआ है। सवर्ण जाति में जन्मी राजलक्ष्मी के मन में अजन्ता के चित्रकार के प्रति सम्मान की भावना है, लेकिन उस चित्रकार के चित्रों के प्रति जो प्यार है, उससे ऊपरी दृष्टि से अपवित्रता का संकल्प खत्म हो चुका है। कहानी के अंत में जातीयता अपना भयंकर रूप धारण कर लेती है। राजलक्ष्मी को छूने की चित्रकार की अदम्य चाह के आगे प्रतिबंध स्वरूप सवर्ण युवती का अहं एवं जातीयता बोध उठ खड़ा होता है। कहानीकार ने यहाँ कलाकार की संवेदना को मुखरित किया है। व्यक्ति जिस बाहरी रूप-सौंदर्य पर आकर्षित होता है वह तो क्षणिक है और क्षणभंगुर है, शाश्वत सौंदर्य तो मन का, विचार का, व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का और उत्कृष्ट कार्यों में निहित होता है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि डॉ.नायर जी की कहानियों की विशेषता यह है कि कहीं भी भारतीयता ह्रास नहीं हुआ है। उनकी दृष्टि सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों पर केंद्रित रहती है। डॉ. नायर जी का समस्त जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए समर्पित है। कहानीकार एक ओर अपने चारों ओर व्याप्त कुंठा, भ्रष्टाचार एवं मूल्य-विघटन को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते हैं तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर आस्था व्यक्त करते हुए आज के मनुष्य के विघटित व्यक्तित्व को ऐतिहासिक चेतना की अखंडता से समन्वित भी करते हैं। डॉ.नायर की कहानियों में स्त्री विमर्श का चित्रण हुआ है। ड़ॉ. नायर जी की कहानियों में नारी भारतीय संस्कृति की रक्षा करती है।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह-करमाला, जि-सोलापुर (महाराष्ट्र)

अन्तर्गत सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाली जिज्ञासा की भावना 'कामायनी' के 'आशा' सर्ग में इस प्रकार मुखरित हुई है-

"है अनन्त रमणीय! कौन तुम? तुम मैं कह सकता?
कैसे हो? क्या हो? इसका तो भार विचार न सह सकता।"[३]

(घ) मानवतावादी दृष्टिकोण - प्रसाद जी किसी सीमित अथवा संकुचित राष्ट्रीयता पर आधारित भावना से आबद्ध होने के स्थान पर समग्र विश्व से प्रेम करते हैं। प्रसाद के काव्य में विश्वबन्धुत्व की भावना और मानव-कल्याण की कामना प्रखर रूप में मुखरित हुई है-

"सब भेद-भाव भुलवाकर, दुःख-सुख को दृश्य बनाता,
मानव कह रे यह मैं हूँ, यह विश्व नीड़ बन जाता।"[४]

इस प्रकार प्रसाद जी ने धार्मिक संकीर्णता तथा वर्ग विशेष की भावना को त्यागकर मानवता और विश्व-प्रेम का प्रचार किया है।

(ङ) स्वानुभूत सुख-दुःख का चित्रण - प्रसाद जी ने प्रकृति पर सर्वत्र चेतना का आरोप करते हुये कभी उसे रजनी के रूप में विकल, कभी खिलखिलाती हुई धूँघट उठा कर मुस्कुराती हुई नायिका के रूप में देखा है तो कभी उसे ऊषाकाल में नयनों का मिलाप करते हुये वनस्पतियों के रूप में जागते हुये देखा है और कभी सिन्धु की शैय्या पर धरा-वधु के रूप में ऐंठते हुये देखा है। इस प्रकार प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति पर चेतनारोप करते हुये उसे विविध मानवीय व्यापारों से युक्त प्रतिबिम्बित किया है; यथा-

"सिंधु सेज पर धरा-वधू अब, तनिक संकुचित बैठी-सी,
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किये-सी ऐंठी-सी।"[५]

(च) स्वानुभूत सुख-दुःख का चित्रण - प्रसाद के काव्य में उनकी स्वानुभूत सुख-दुःख की अनुभूतियों का चित्रण हुआ है। आँसू तो उनकी अपनी अनुभूतियों का श्रेष्ठतम काव्य है-

"रो-रोकर सिसक-सिसकर, कहता मैं करुण कहानी,
तुम सुमन नोचते सुनते, करते जानी-अनजानी।"[६]

(छ) नारी की महत्ता - प्रसाद जी ने नारी को करुणा, ममता, त्याग, बलिदान, सेवा, समर्पण, अगाध, विश्वास आदि से युक्त बताकर उसे साकार श्रद्धा रूप प्रदान कर दिया है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत गपग तेल में,
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"[७]

(२) कलापक्षीय विशेषतायें

प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य में छायावाद का प्रवर्त्तन किया है। उनके काव्य में छायावाद काव्य के कलापक्ष का प्रौढ़ व परिष्कृत रूप विद्यमान है। उनके काव्य की कलापक्षीय विशेषतायें निम्नलिखित हैं-

(क) लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शब्द - अपने सूक्ष्म भावों और विशिष्ट क्रियाकलापों को प्रस्तुत करने के लिये प्रसाद जी ने लक्षणा और व्यंजना का आश्रम लिया है। इसके लिये उन्होंने प्रतीकात्मक शब्दावली को अपनाया है।

(ख) सूक्ष्म अलंकार विधान - प्रसाद जी ने पाश्चात्य साहित्य के मानवीकरण विशेषण विपर्यय तथा ध्वन्यार्थ व्यंजना जैसे अलंकारों के साथ परस्परागत अलंकारों को भी सूक्ष्म उपमान विधान प्रदान किये हैं और अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रसाद जी के अलंकार-विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनके अलंकार सर्वत्र रस या भाव का चित्र-सा अंकित कर देते हैं।

(ग) भावनुकूल चित्रोपम भाषा - प्रसाद के काव्य में सर्वत्र सुसंगठित शब्दयोजना दृष्टिगोचर होती है। 'कामायनी' और 'आँसू' में उनके चित्रात्मक बिम्ब-विधान के दर्शन होते हैं-

"सिंधु सेज पर धरा-वधू, तनिक संकुचित बैठी सी,
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किये-सी ऐंठी सी।"[८]

(घ) काव्य की छन्द-सम्बन्धी विशेषता - प्रसादजी ने अनेक नवीन छन्दों को जन्म दिया है। 'आँसू' के छन्द हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। कतिपय समीक्षकों ने तो अब इसे आँसू छन्द नाम देना ही समीचीन माना है। कामायनी महाकाव्य और उनकी अन्य गति-रचनाओं में अधिकांश छन्द, स्वर और लय के अनुसार चलते हैं। उनमें संगीतात्मकता सर्वत्र विद्यमान है।

डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी के शब्दों में - "वे छायावादी काव्य के जनक और पोषक होने के साथ ही आधुनिक काव्यधारा का गौरवमय प्रतिनिधत्व करते हैं। प्रसाद जी ने जहाँ एक ओर रीतिकालीन श्रृंगारिकता से कविता-कामिनी को निकाला वहीं उन्होंने द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता के नीरस एमं शुष्क रेगीस्तान में, उसके सूखे हुये कष्ठ को मधुर रस-धार प्रदान की।"

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

१. *जयशंकर प्रसाद, आँसू*
२. *जयशंकर प्रसाद, कामायनी*
३. *जयशंकर प्रसाद, आशा सर्ग, कामायनी*
४. *जयशंकर प्रसाद, कामायनी*
५. *जयशंकर प्रसाद, कामायनी*
६. *जयशंकर प्रसाद, आँसू*
७. *जयशंकर प्रसाद, कामायनी*
८. *जयशंकर प्रसाद, कामायनी*

प्रवक्ता (हिन्दी), रा.इ.का.नौल-बासर, टिहरी गढ़वाल २४९१५५
Mob: 09690108090

विश्व पटल पर हिन्दी-विश्व भाषा के रूप में

श्रीमती वन्दना सक्सेना

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" - ***भारतेन्दु हरिशचन्द्र***

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा है। लेकिन पहले ही हिन्दी विश्व भाषा बनने को है।

अब हिन्दी दिवस ही नहीं विश्व हिन्दी दिवस भी मनाए जाते हैं। हिन्दी भारतीय सभ्यता/संस्कृति की भाषा है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया था, क्योंकि हिन्दी पहले से ही भारत की सम्पर्क/सम्प्रेषण की भाषा रही है। इसके बाद हिन्दी देवनागरी लिपि में १४ सितंबर १९४९ को भारत संघ की राजभाषा भी बना दी गयी (संविधान का अनु.३४३)। अर्थात् सरकारी कामकाज की भाषा बन गयी। लेकिन अब तो हिन्दी विश्व भाषा बन रही है। हिन्दी को विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा का सम्मान मिल रहा है। इसके परिप्रेक्ष्य में विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने हिन्दी का गौरव और अधिक बढ़ाया है ताकि हिन्दी विश्वभर में प्रतिष्ठित हो।

सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रचार-प्रसार की वजह से सन् १९७५ में नागपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ जिसमें हिन्दी को विश्व भाषा बनाने का प्रयास पारित हुआ। आज हिन्दी विश्व के बहुत से देशों में किसी न किसी रुप में प्रचलित है। मॉरिशस, फीजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गयाना जैसे देशों में हिन्दी खूब प्रचारित है। खाड़ी देशों में भी हिन्दी सम्पर्क भाषा है। भूमंडलीकरण/उदारीकरण/व्यावसायीकरण/बाज़ारीकरण आदि के इस दौर में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। विदेशी कम्पनियों ने भी हिन्दी का महत्व समझा है। अमेरिका में भी हिन्दी सिखाने हेतु काफी खर्च किया जाता है। अब हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकारिक भाषा बनाए जाने के प्रयास ज़ारी है। अभी चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश एवं अरबी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाएं हैं। इसमें सातवीं भाषा के रुप में हिन्दी को स्थान प्राप्त होने पर हिन्दी विश्व भाषा पर प्रतिष्ठित हो सकेगी। लेकिन अब हर भारतवासी का कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा/राजभाषा के विश्व भाषा रुप में प्रतिष्ठित करवाने का प्रयास करें।

बहुभाषी देश भारत में हिन्दी की वाणी में भारत बोलता है क्योंकि इसमें भारत की आत्मा बसती है, सभ्यता/संस्कृति बसती है। इसका उद्भव प्राचीन भाषा संस्कृत से हुआ है। हिन्दी संस्कृत से उद्भूत होकर पाली, प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिन्दी बनी। १२-वीं सदी में मुगलों के शासन में 'फारसी' के साथ हिन्दी भी सहभाषा बनी। इसके बाद से हिन्दी निरंतर विकास करती गयी और विश्व पटल पर छा गयी। 'मॉरीशस' में सन् १९२६ में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 'तिलक विद्यालय' के रुप में हुई। इसके बाद विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्वभर के हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार एवं हिन्दी प्रेमी आते हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के प्रति जागरुकता पैदा करना।
२. समय-समय पर हिन्दी के विकास का आकलन करना।
३. विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग/प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना।
४. हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के रिश्तों को गहराई/मान्यता प्रदान करना।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अभी तक दस विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं, जो निम्नलिखित हैं-

१. प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर - १० जनवरी १९७५ से १४ जनवरी १९७५
२. द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, पोर्टलुई मॉरीशस - २९ अगस्त १९७६ से ३० अगस्त १८७६
३. तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली (भारत) - २८ अक्टूबर १९८३ से ३० अकटूबर १९८३
४. चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन, मॉरीशस - २ दिसम्बर १९९३ से ४ दिसम्बर १९९३
५. पाँचवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, त्रिनिदाद और टोबेगो - ४ अप्रेल १९९६ से ८ अप्रेल १९९६
६. छठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, लंदन - २४ सितम्बर १९९९ से २३ सितम्बर १९९९
७. सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, सूरीनाम - ५ जून २००३ से ९ जून २००३
८. आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयोर्क - १३ जुलाई २००७ से १५ जुलाई २००७

९. नवम् विश्व हिन्दी सम्मेलन, जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) - २२ सितम्बर २०१२ से २४ सितम्बर २०१२

१०. दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, भोपाल - १० सितंबर २०१५ से १२ सितंबर २०१५ तक

इनके द्वारा हिन्दी विश्व मंच पर आयी। इसी क्रम में भारत सरकार ने प्रतिवर्ष १० जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाए जाने का भी निर्णय किया। जबकि हिन्दी दिवस १४ सितम्बर को मनाया जाता है। इस दिशा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का भी योगदान है। दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन जो भोपाल में १० सितम्बर २०१५ से १२ सितम्बर २०१५ में हुआ उसमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर बल दिया गया।

हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में मान्यता हेतु भारत सरकार ने 'महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' की स्थापना की है। फरवरी २००८ में मॉरीशस में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' की स्थापना की गयी है। इससे विश्व हिन्दी त्रैमासिक निकलती है। हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में विदेशों से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं का भी योगदान है। कुछ निम्नलिखित हैं-

१. 'भारत दर्शन' - न्यूजीलैंड से प्रकाशित।

२. 'सरस्वती' - कनाडा से प्रकाशित।

३. 'अन्यथा' - अमेरिका से प्रकाशित।

४. 'हिन्दी परिचय' एवं 'गर्भनाल' प्रवासी भारतीयों द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिकाएँ हैं। (अमेरिका)

इनके अलावा विश्व हिन्दी न्यास समिति द्वारा 'कलायन', 'कर्मभूमि' आदि त्रैमासिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। इसके अलावा 'प्रवासी टुडे' एवं 'पुरवाई' भी विदेशों से प्रकाशित होती है। अमेरिका का 'टेक्सास' प्रांत हिन्दी लोकप्रियता में अव्वल है। इसके अलावा विदेशी माध्यमों द्वारा हिन्दी में समाचारों के प्रसारण ने भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। बी.बी.सी. लंदन, वायस ऑफ अमेरिका, जर्मन रेडियो, विविध भारती (सीलोन) आदि से समाचारों का प्रसारण प्रमुख है। इसके अलावा बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी संस्थाओं द्वारा विदेशों में हिन्दी शिक्षण होता है। हिन्दी विश्व के अनेक देशों में पढ़ाई जाती है। 'इंडरनेट' पर सरल हिन्दी डॉट काम वेबसाइट पर हिन्दी शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी समाचार, हिन्दी विकिपीडिया, हिन्दी जाल निर्देशिका एवं यूनिकोड संबंधी जानकारी प्रास होती रहती है। अब हिन्दी 'भूमंडलीकरण युग' में विश्व भाषा बन चुकी है। विश्व में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी है। अब इसे विश्व की प्रथम भाषा का गौरव बनने में अधिक समय नहीं है।

हिन्दी - विश्व भाषा के रूप में

विश्व भाषा के रूप में हिन्दी समग्र भूमंडल की तीसरी भाषा है। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में हिन्दी का प्रयोग व्यापक है। यहाँ हिन्दी को लोग अपनी संस्कृति का अंग मानते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी विश्व भाषा है। मॉरीशस हिन्दी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष 'श्री जयनारायण राम' के शब्दों में "हिन्दी उपनिषद, रामायण और गीता की बेटी बनकर आयी और उनके धर्म एवं संस्कृति का अंग बनकर अभी भी जीवित है।" यहाँ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा जनसंपर्क की भाषा हिन्दी है। इसे मानक हिन्दी कहते हैं। इसी में समाचार पत्र, पत्रिकाएं निकलती हैं। मॉरिशस में १९०३ में 'हिन्दुस्तानी' एवं 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का प्रकाशन हुआ। बाद में आभा, दर्पण, रणभेरी आदि भी प्रकाशित हुई। फीजी में सन् १९२३ में 'फीजी समाचार' निकला। इसके बाद, 'भारत पुत्र', 'बुद्धि', 'बुद्धिवाणी', 'जाग्रति', 'जयफीजी', 'सनातन संदेश' का प्रकाशन हुआ जिन्हेंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाया। विश्व भाषा तक पहुँचाया। प्रमुख चेक शिक्षाविद 'डॉ.ओदेनोन स्मेकल' के शब्दों में "हिन्दी ज्ञान मेरे लिए अमृतपान है, जितनी बार भी पीता हूँ, उतनी बार लगता है, पुनः जीता हूँ।"

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी बंगलादेश, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया आदि देशों में सामाजिक, सांस्कृतिक, जनसम्पर्क के प्रेरणा है। इसके अलावा अमेरिका, इंगलैंड, रूस, फ्रांस, जापान, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी के आध्ययन-अध्यापन का काम हो रहा है। आज हिन्दी विश्व के कई देशों में पढ़ाई जाती है। लगभग १७५ विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इनमें से ४५ विश्वविद्यालय अमेरिका में हैं जिनमें कैलिफोर्निया, शिकागो, टेकसास, कोलंबिया प्रमुख हैं। हिन्दी सामर्थ्यवान भाषा है, जिसकी जड़ें मजबूत हैं। इसलिए यह विश्वभर में किसी न किसी रूप में जीवित है। हिन्दी आज सिर्फ भारत की राष्ट्रभाषा न रहकर विश्व की महान भाषा बन गयी है। भूमंडलीकरण/उदारीकरण के दौर में भारत के बाहर भी कई देशों, जैसे-नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, कानेटा आदि में सभ्यता/संस्कृति को जोड़नेवाली भाषा बन गयी है। 'विश्वगांव' की परिकल्पना में हिन्दी सम्प्रेषण की दृष्टि से व्यापार, व्यवसाय, वाणिज्य, सभ्यता, संस्कृति को जोड़नेवाली उपयोगी भाषा बन गयी है। हिन्दी की विश्व भाषा के रूप में व्यापकता बढ़ाने में दृश्य मीडिया एवं हिन्दी फिल्मों का भी खासा योगदान है। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों की सम्पर्क भाषा हिन्दी है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों की भूमिका भी कम नहीं है।

हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें प्रवासी हिन्दी

साहित्यकार जैसे फिजी के समला प्रसाद मिश्र, मॉरीशस के अभिमन्यु अनन्त, प्रो.वासदेव विष्णु दयाल, सूरीनाम के ब्रजेन्द्रकुमार भगत, मुंशी रहमान ख़ान आदि प्रमुख है। फिजी में हिन्दी संवैधानिक संसदीय मान्यता प्राप्त भाषा है। चीन के 'प्रो.चिन्हिन होन' ने 'रामचरितमानस' का हिन्दी के अनुवाद किया है। टोक्यो विश्वविद्यालय के 'प्रो.पाथाओ दोई' ने भी हिन्दी में प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय परिश्रम किया है। चेक के प्रवासी साहित्यकार 'श्री. ओदेलन स्मेकल' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। विश्व स्तर पर हिन्दी महत्वपूर्ण भाषा है। श्री. अटल बिहारी बाजपेयी के शब्दों में-

"गूंजी हिन्दी विश्व में स्वप्न हुआ साकार।
राष्ट्रसंघ के संघ में - हिन्दी की जयकार।।"

२१-वीं सदी में हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, संचार माध्यम की भाषा, आडियो, वीडियो, फोर्स मीडिया, दृश्य मीडिया, सिनेमा, समाचार, रेडियो के साथ-साथ विश्वभाषा बन गयी है क्योंकि हिन्दी सर्वाधिक सहज, सरल, सुबोध, बोधगम्य, प्रवाहमयी भाषा है। इसके अलावा इसमें हर भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों आत्मसात करनके की विलक्षण शक्ति है। इसीलिए इसमें ऊर्दू, फारसी, अरबी, संस्कृत, पालि, अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी शामिल हैं। हिन्दी का यही लचीलापन उसे विश्वभाषा में विकसित करता है। इसीलिए हिन्दी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हो रही है। हिन्दी अपनी मनोवैज्ञानिक लिपि देवनागरी में विश्व स्तर पर विकास करती जा रही है। आज हिन्दी अपनी अधोसंरचना, मनोवैज्ञानिक, प्रभविष्णुता, सर्वग्राह्यता, सम्प्रेषणीयता, सरलता, सुलभता, रोचकता, समृद्ध शब्द भंडार, वैज्ञानिकता के कारण विश्व भाषा का रुप ले चुकी है। अभी चीनी भाषा प्रथम स्थान पर है, पर हिन्दी प्रथम स्थान पर आने की दौड़ में शामिल है। विश्व के लगभग चालीस से अधिक देश के लोग हिन्दी समझते हैं, क्योंकि हिन्दी की शब्द सम्पदा विशाल है। हिन्दी शुरु से ही साधु, संतों, फकीरों, पर्यटकों एवं जन-सामान्य की सम्पर्क एवं सम्प्रेषण की भाषा रही है। इसीलिए हिन्दी में असीमित साहित्य सृजन हुआ है, जो विश्व भर में फैला है, पढ़ा जाता है और जाना जाता है।

आज विश्व के लगभग ७० करोड़ से अधिक लोग हिन्दी जानते हैं। डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट-२०१५ के अनुसार हिन्दी सबसे लोकप्रिय भाषा है। इन्हीं की रिपोर्ट की एक साधारण गणना निम्नलिखित है-

१.	भारत में हिन्दी जानने वाले	१०१२ मिलियन
२.	पाकिस्तान में हिन्दी जानने वाले	१६५ मिलियन
३.	बंगलादेश में हिन्दी जानने वाले	७० मिलियन
४.	नेपाल में हिन्दी जानने वाले	२५ मिलियन
५.	४ राष्ट्रों में हिन्दी जानने वालों का योग	१२७२ मिलियन
६.	विश्व के अन्य राष्ट्रों में हिन्दी जानने वाले	२९ मिलियन
	सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी जानने वाले	१३०० मिलियन

(डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किए गए शोध अध्ययन २०१५ के अनुमानित आंकड़े)

भारत एक बहुभाषी, बहुधर्म, जाति, सम्प्रदाय वाला देश है। इसके लिए कहा जाता है कि 'दो कोस पर पानी बदले चार कोस पर बानी'। 'विविधता में एकता' यहां की संस्कृति है। पर हिन्दी सबकी भाषा है, सबके लिए है क्योंकि अब यह विश्व भाषा है, 'कवि संतोषानन्द' के शब्द में-

"जिसने जन-जन के जीवन का,
रुप तराशा है, मेरी भाषा हिन्दी भाषा सबकी भाषा है।"

वरिष्ठ कवयित्री, कहानीकार, साहित्यकार
एम.एक (१) सरस्वती नगर, भोपाल ४६२००३ (म.प्र.)

दादा गीता

कुरीप्पुष़ा श्रीकुमार की नग्न कविताएँ

अनुवाद : डॉ. षण्मुखन

आठवीं कक्षा की
आमिना को-
जिसे
किसी का
कुछ भी
अता-पता नहीं है
देखने
एक आदमी आया।
ऊंट के पसीने की गंध
ढाढी, पगडी
ललाट पर
नमाज़ का निशान
अम्मी बोली
गांधीजी
हर रोज़
गीता पढ़ते थे
साथ ले भी जाते थे।
वैसे ही थे
गोड्से भी।

दूल्हा
बाप बोला
दूल्हा
आमिना का दिल बोला
दादा दादा।

लघुकथा

कृतघ्नता

डा.वी.गोविन्द षेणाय
सौभाग्या, ओल्लूकरा, त्रिचूर ६८०६५५

लेखक वी.गोविन्द शेनाय कृतघ्नता की भी हद होती है. विट्टप्पा का यह सातवाँ दिन है अस्पताल में। न्युमोनिया का अन्देशा है। सिवाय पत्नी के कोई साथ नहीं है। न सगे संबंधियों ने उनकी सुधि ली है, न इष्ट मित्रों ने ही। कौन संस्था ऐसी है जिसकी मदद उन्होंने नहीं की है!

लोन्स एन् सर्वीसस का अपनी कारोबार उन्होंने अपने पुत्र को सौंपा, उसकेलिए दुमंजिला मकान बनवाया। वैसा ही एक मकान पुत्री केलिए भी। दहेज की नकद रॉशि और जवाहिरात अलग। अनाथालय को चन्दा औरों से दिलवाया; स्कूली विद्यार्थियों को पुस्तकें बाँटीं और एक गरीब विद्यार्थी को अपने यहाँ आश्रय दिया। क्या नहीं किया उन्होंने? आँखों में आँसू झलझला आये। अनायास आँसू। कुछ भी स्पष्ट नहीं दीखा। पत्नी भी नहीं। वह गयी कहाँ? दुनिया ने सदकर्मियों की सुधि कहाँ ली है! कृतज्ञता प्रकट करना तो दूर रहा, सताया ही अधिक है। याद बहुतों की आ गई, महापुरुषों की, ईसा मसीह और सुकरात की भी, इतने में देखा पत्नी और नर्स आ रही हैं। पत्नी ने कहा-तुम्हारी रिहाई हुई है, बीमारी खास कुछ नहीं सिवाय ज़रा सी खांसी के, जिस केलिए गोलियां दी गई हैं। यह कमरा एक सख्त बीमार मरीज केलिए नियत हुआ है। अभी खाली करना है। नर्स ने कहा अस्पताली बिल की राशि खैरात के खाते में जमा की गई है। डॉक्टर के निर्देश से विट्टप्पा ने पूछा - राशि क्या सचमुच ही खैरात के खाते में जमा की गई है? आखिर हमें यहाँ रह कर करने का भी क्या है? •

देशरत्न

(देशरत्न प्रोफ. (डॉ) चन्द्रशेखरन नायरजी को समर्पित)

डॉ.रंजीत रविशैलम्
रविशैलम, कट्टच्चलकुषी पी.ओ., बालरामपुरम, त्रिवेन्द्रम, केरल-६९५५०१

महात्मा आप व्यास समान।
केरल का नाज़ और मान।
हिन्दी भाषा का भारत मान।
हृदय से उभरा है आपको नमन।
हिन्दीतर, पर हिन्दी भाषी-
विद्वानों में मृदु भाषी।
आपकी जिह्वा घी परत-
आपकी मौली मेधारत।
महात्मा आप व्यास समान।
नाटक, कहानी, कविताओं पर-
आपके नाम का लगा है पर।
उन्नत पीठ पर बैठते हैं-
बच्चे आपको पढ़ते हैं।
महात्मा आप व्यास समान।
रत्नों में आप हैं देशरत्न
फिलहाल में प्राज्ञ हैं हिन्दीरत्न।
विराट् है आपका साहित्य आकार
विराजते है जैसे मनमोहक चित्रकार।
महात्मा आप व्यास समान।
महान रहेंगे आप चिरंजीव
जैसा आपका महाकाव्य चिरजीव।
मंलमय हो आपका जीवन
सुधारो, हमारा भाषा जीवन।
अपने जी में भाषा को घोला-
जीवन में आपने हिन्दी को मोला।
महात्मा आप व्यास समान-
मैं-रविशैलम्-आपका शिष्य समान।
महात्मा आप व्यास समान। •

सीख

नरेश हमिलपुरकर
चिटगुप्पा-५८५४१२, बीदर, कर्नाटक

खुद को जान, पहचान, परख
दिल में प्रेम, परोपकार रख
प्रेम के अक्षर तो सीख फिर
कुछ तो पढ़, कुछ तो लिख
घर जले तो कुछ तो बचेगा
दिल जले तो धुआं न राख
लेख छुपाले छुप न सकेगा
मन की बात बतायेगा मुख
दर्द कम होगा, घाव भी मिटेंगे
पर रहेंगे सदा रंज ओ दुख
भूख से चाहे जान चली जाए
पर कभी न जाना मांगने भीख
दिल लगाने से पहले 'नरेश'
सौ सौ बार आजमा के देख •

प्रकृति का महाकाव्य

जगनाथ विश्व

व्योम-शिखर पर काले मेघों का जमाव
जैसे आदिवासियों का सामुहिक त्योहार
संपेरे की बीन पर मोहित
नागिन-सी दौड़ती बिजली
गरजती गड़गड़ाहट पर
ताण्डवरत सागर-सरिताएँ
व्यासी मिट्टी के अधरों पर
तरावट का मुखरित सन्तोष
मनचले चरवाहों की बंशी पर
ग्वालन की मदमाती थिरकन
सीली-सीली हवा में गूँजता गीतों का गुंजन
लगता है प्रकृति का महाकाव्य
पुरस्कृत हुआ है। •

कहानीकार नायर

डॉ.ओमप्रकाश शर्मा, प्रकाश

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों की पढ़ना एक गरहे अनुभव से गुज़रना है। सबसे बड़ी बात है कि ये पाठक को विरत नहीं होने देतीं। पाठक उन्हें अपने आस-पास की ज़मीन से जुड़ा पाता है।

इनकी कहानियों के अनेक रंग-रूप हैं। लेखक जन-जीवन का सटीक चिन्तक है। उसका पर्यवेक्षण पैना है। जहां भी अवसर निकलता है वे जन-साधारण की पीड़ा को, उनकी भूख-प्यास को तथा उनके फटे-फाल होने की स्थिति को बड़ी शिद्दत के साथ उकेरते हैं। निम्न वर्ग की पीड़ा से वे प्रायः विचलित दिखते हैं। राजनीतिक पार्टियों द्वारा सामान्य जनता की प्रवंचना-प्रतारणा कई कहानियों का महत्वपूर्म अंग है। केवल चन्द रूपयों के भाड़े के एवज़ में बिना जाने-समझे ज़िंदाबाद-मुर्दाबाद के नारों का रेखांकन कई स्थानों पर हुआ है। विभीन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याएं नायर की कहानियों में ताकती-झांकती रहती हैं, जैसे गरीबी, बेकारी, नगरों की ओर पलायन, आवास और भूख की समस्या, रोग और जन-स्वास्थ्य की उपेक्षा अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता आदि। कहानियों में बहुत से समकालीन संदर्भों को चीन्हा जा सकता है। 'अब कलयुग है' में मूर्ति पर थूकना और नंगे चित्र बनाने के संकेतों को एम.एफ. हुसैन के चित्र बनाने के मौजूदा विवाद के रुबरु रख कर देखा जा सकता है। इस कहानी की पूरी संरचना व्यंग्य की है। जहाँ कहीं संक्रमणशील भारत को विषयवस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है वहाँ लेखक अपनी आस्थावादी दृष्टि को साभिप्राय व्यक्त करता है कि अन्ततोगत्वा हमारी अपनी संस्कृति और राष्ट्रीयचेतना ही नए भारत के निर्माण की पथ-प्रदर्शिका बन सकती है। कहानियों में बदलाव के वास्तविक दृश्य हैं - "आजकल नया पैसा तुम देखते हो न? उन दिनों पैसा छोटा सिक्का था। दो पैसे देने पर एक बड़ा दोसा मिल जाता था। एक पैसे के चार केले मिलते थे। चार पैसे में दो जून पेट भर खाने को आलू मिल जाता था लेकिन पैसे कहाँ मिलते थे?" (बहुचर्चित कहानियाँ, पृ.६०) लेकिन साथ-साथ उसके फलितार्थ का विश्लेषण भी लेखक करता चलता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कहानीकार सामाजिक दायित्व के प्रति पूर्णतः सजग है।

कहानियों का एक उल्लेख्र पक्ष प्रेम की अभिव्यक्ति है। अधिकांश कहानियों में वह लगभग अनिवार्य तत्त्व के रूप में अनुस्यूत है जहाँ उसके कई रूप प्रस्फुटित हुए हैं - रोमानी, चंचल, ठहरा हुआ, दिल में गहरे घर करता हुआ आदि। द्रष्टव्य है कि सभी रूपों में वह गौरव मंडित है। छिछले रूप की गंध उसमें कहीं नहीं है - प्रणय निवेदन और भाव विह्वलता की स्थितियों में भी नहीं।

विवेच्य कहानियों के पात्र प्रायः संघर्षरत हैं। उनके लिए रोज़ी-रोटी बड़ी चीज़ है। जीवन का सामना उनके लिए चुनौती लेकर आता है। सम्भवतः इसी वैशिष्ट्य में वे हमें वास्तविक और अपने निकट के लगते हैं। लेखक में स्त्री-मनोविज्ञान की गहरी समझ विद्यमान है। फलतः नारी पात्रों की सृष्टि में उन्हें विशेष सफलता मिली है। युवा पात्र और पुरानी पीढ़ी के पात्र साथ-साथ चलते हैं जो समानान्तर विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेखक के केरलीय व्यक्तित्व के बावजूद वे टकराते कहीं नहीं; महज अपनी-अपनी सरणी में चलते हुए अपनी-अपनी बात कहते चलते हैं। पाठक अपने तौर पर निष्कर्ष निकालने के लिए स्वतंत्र रहता है। प्रस्तुत कहानियों के शिल्प का यह पक्ष महत्वपूर्ण है।

नायर की कहानियाँ अन्तः सम्बन्धों के चित्रण को महत्व देती हैं। 'बाप का बेटा' कहानी में कलाकार नम्पीश अपने पुत्र कमल की चित्रकला को अन्तः स्वीकृति दे ही देता है। बेटे की कला को पहचानना और उसे मान्यता देना ही, वस्तुतः पुत्र के वास्तविक स्वरूप को समझना है। पिता उस सांसारिक परिपाटी को तोड़ देता है जो सामान्यतः यह मानता है कि कला की नैसर्गिक प्रतिभा को दबाकर स्कूली पढ़ाई को महत्व दिया जाए। कहानी के निष्कर्ष में वह पिता का कर्तव्य पूरा कर देता है और सच्चे कलाकार का भी।

'भवोती अम्मे' एक सशक्त कहानी है जो मानव की अन्दरुनी करुणा की झलक दिखलाती है। इसमें कई गुत्थियां और समस्याएं प्रकारान्तर से छिपी हुई

डॉ.सुरेश उजाला के दो मुक्तक

डॉ.सुरेश उजाला
१०८-तकरोही, मायावती, कॉलोनी मार्ग, इन्दिरा नगर, लखनऊ-१२६०१६. उ.प्र.

नींबू सा मैं तिल-तिल रोज निचुड़ता जाता हूँ
बिना पंख मैं आसमान से जुडुता जाता हूँ
भाषा की कस्तूरी मेरी महक रही जग में
दिग्दिगन्त मैं खुशबू बनकर उड़ता जाता हूँ
जीर्ण-शीर्ण हैं वस्त्र जिन्हें अब सीना मुश्किल है
घुट-घुट कर पीड़ा का सागर पीना मुश्किल है
फिर अभावों की गठरी कांध कर धरी हुई
निर्धनता के दल-दल में अब जीना मुश्किल है।

सुख - दुःख

डॉ.सुशीलकुमार परीट

वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक, सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, लक्कुंडी ५९११०२, बैलहॉगल, जि-बैलगांव (कर्नाटक)

सुख पाना है तो दुःख पीना है
मरना है तो आज जीना है।।
कल आज कल की चिंता छोड़
सहकर सब चल जहाँ हर मोड।।
अब मन की अशांति डुबोती है
और बेचैनी पागल कर जाती है।।
पर भटक के हार गया है कोई
आखिर में इच्छायें भी है सोई।।
वहीं रह गया है सब बाकी दुःख
जहाँ अटूट चाह थी कभी सुख।। •

सृष्टि-स्थिति-लय

वी. आनन्दवल्ली,

सौपर्णिका, विनोबानिकेतन पी.ओ., आर्यनाट (Via), पिन-६९५५४२

इस महाप्रपंच के पंचभूतों से ईश्वर ने
जैसे मानवसृष्टि की
वैसे ही लोक-जीवन छोड़ जाएंगे हम, जब
पंचभूतों में ही लीन होंगे।
मिट्टी मिट्टी में, नभ निजमंडल में ही,
प्राण वायू ऊपर जाएगी।
तेज तेजोपुंज में, पानी स्व सन्निधान में
ऐसे पाँचों फिर लौटेंगे।।
सृष्टि प्रक्रियायें फिर दुहराती रहेगी
पाँचों दुबारा भी समायेंगे।
धरा में पुनर्ज्जनी होती रहेगी सदा
ईश्वरेच्छा जैसी हो वैसी।।
जन्म-कर्म के फलप्राप्तिरुप में फिर भी
जन्म-स्थितियाँ मिल जाएंगी।
मर्त्य जन्म मिलना तो स्वयं जन्मान्तरों से
पुण्य संचय कर लेना ही।।
मर्त्य-जन्म में भी सत्कर्म करते रहें तो
अमर्त्य बन जाना भी आसान।
सत् वचन-चिन्ता-कर्म के बिना और कोई
बड़ी समस्या कुछ नहीं है।
स्वार्थता रूपी तमोमय भाव में कभी
सद्भाव तो नहीं सोचना।
अपने सुखों से परे, अपरों केलिए ही
अपने को समर्पण कर लेना।
कितने महत्जनों से कथित आशय हैं ये
बारंबार हम सुन चुके हैं।
जो भी हो, महत्वचन को सदा केलिए
सोना (कांचन) समझना ही अच्छा।
तदनुकरण करना उससे बढ़कर है। •

हैं। भवोती समाज के विषम-विभाजन की शिकार है। इसके बावजूद कोई माई का लाल उसके व्यक्तित्व को झुका नहीं पाता, झुठला नहीं सकता। उसका चरित्र सबल और सुदृढ़ है। कोई मान्यता या कानून उसे विचलित नहीं करता। उसके पास खोने को कुछ नहीं इसलिए मनुष्यकृत गीदड़-भभकियों की वह तनिक भी परवाह नहीं करती। वह हर चीज़ को ठेंगा दिखाने की सामर्थ्य रखती है। वह समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर है। छीना भी उससे जा सकता है जिसके पास कुछ हो। भवोती की निडरता का यही रहस्य है। निर्धनता के अभिशाप को झेलते-झेलते वह इतनी मजबूत हो गई है कि नियम-कायदे, सामाजिक प्रशंसा-निन्दा उसके लिए अर्थहीन हो गए हैं। कहानी में इस अद्भुत व्यक्तित्व का चरित्र-चित्रण बहुत सशक्त और प्रभावपूर्ण है।

'चमार की बेटी' का भावपक्ष सबल है। इसकी कहानी कला में एक विशेष प्रकार का मार्दव है किन्तु अन्त की ओर बढ़ते-बढ़ते एक व्यथा-दंश भी उभरने लगता है।

'बापू का संकेत' आदर्शवादी कहानी है जो शिल्प की दृष्टि से कमज़ोर है। 'प्रोफेसर और रसोइया' में लेखक पढ़े-लिखे तबके की विवशता और बोझ तथा साधारण व्यक्ति की मौजमस्ती को आमने-सामने लाकर कहानी का ढाँचा निर्मित करता है। इसमें स्वतन्त्र भारत में नागरिकों की अपेक्षाओं पर भी टिप्पणी है।

प्रस्तुत कहानियों में प्रायः केरल की अपार निर्धनता झांकती रहती है। लेखक ने उस भीषणता को लक्ष्य किया है जो उसके चारों ओर फैली-पसरी है (द्रष्टव्य 'चर्चित कहानियां' पृ.२६)। भाषा प्रयोग में संस्कृतनिष्ठता है।

विवेच्य कहानियों में इंसानियत का पक्ष प्रबल है। भिखारी रामू हो या नाई रामू, मनुष्य के भीतर के उज्ज्वल पक्ष को उभारते की चेष्टा की गई है, जहाँ मनुष्य, मनुष्य के काम आने का आदर्श उपस्थित किया गया है। 'चमार की बेटी' ने यह रूप निर्धनता-जन्म व्यथा से आप्लावित है। कई कहानियों में इसे तीखे व्यंग्य के माध्यम से भी उभारा गया है।

प्रो.नायर की कहानियों की वर्णन-कला सम्मोहक है। वे हल्के-फुल्के मज़ाक से आवेष्टित हैं। फलतः उनकी पठनीयता बढ़ गई है। 'अब आप मकान बदलिए' जैसी दो-एक कहानियों में रहस्य का पुट डाल दिया गया है।

कहीं-कहीं पर भाषा में शब्द-चयन और मुद्रण का शैथिल्य तल्लीन पाठक को अखर सकता है। **सी४बी, ११० (पॉकेट-१३), जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८**

SBT SOFT POWER HOME LOAN

Just a click away!

- Apply Online
- Instant Sanction

*Terms and conditions apply

Concession In Processing Charges | Low Interest

SBT
A Long Tradition of Trust

State Bank of Travancore

www.statebankoftravancore.com | www.facebook.com/statebankoftravancore | YouTube www.youtube.com/user/sbtofficialchannel

Toll Free No.1800 425 7733 | For Account Balance Give Missed Call : 1800 270 2525

डॉ.नायरजी विश्व हिन्दी सम्मेलन के सन्दर्भ में अपनी रचनाएं केन्द्रमंत्री श्री. राजनाथ सिंह जी को भेंट करते हैं।

विश्ववेदी के आठवें वार्षिक सम्मेलन में डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी को साहित्य पुरस्कार से सम्मानित करके राज्यसभा मेंबर डॉ.टी.एन.सीमा जी शाल ओढा देती है।

केन्द्रमंत्री राजनाथ सिंह जी विश्व हिन्दी सम्मान प्रदान करते हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री अनुमोदन करते हैं।

प्रो.एन.आर.पिल्लै और पुत्री प्रवीणा के ग्रंथों के प्रकाशन के संदर्भ में डॉ.चन्द्रशेखरन नायर का सम्मान हुआ।

डॉ.तंकमणि अम्मा को सम्मान दिया गया हैं। सूरर्या अंतर भारती भाषा पुरस्कार-२०१५

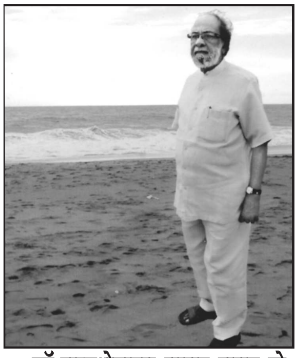

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर समुद्र के किनारे पर

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।